
Azadi Ka Amrit Mahotsav
SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest
पूर्वाशा
वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका
अंक
32
वर्ष 2022-2023
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
मेघालय, शिलांग - 793 001



माननीय केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी दिनांक 14 सितम्बर 2023 को श्री शिव छत्रपति स्पोर्टस कॉम्पलेक्स, बालेवाड़ी, पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर ऑनलाइन अभिभाषण देते हुए ।



श्री भर्तृहरि महताब, उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति के करकमलों द्वारा दिनांक 14 सितम्बर 2023 को श्री शिव छत्रपति स्पोर्टस कॉम्पलेक्स, बालेवाड़ी, पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा 300 से अधिक कार्मिक वाले मंत्रालय/विभाग की श्रेणी में वर्ष 2022-23 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री भवानी शंकर, महानिदेशक, कार्यालय नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ।



पूर्वाशा परिवार

संरक्षक

श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
मेघालय, शिलांग - **793 001**

संपादक

श्री सागर विजय काळे - उप महालेखाकार (प्रशासन)

सदस्य

श्री मैथ्यूस मैथ्यू	-	उप महालेखाकार (ए.एम.जी - I एवं संपदा)
श्री एस. सामीदुरै	-	उप महालेखाकार (ए.एम.जी - II एवं III)

सहयोग

श्री अमित कुमार वर्मन	-	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
स्वर्गीय एल. सिमते	-	हिन्दी अधिकारी
मुहम्मद जियाऊल हक	-	वरिष्ठ अनुवादक
श्री सोनु कुमार साव	-	कनिष्ठ अनुवादक
श्री जितिन कुमार	-	कनिष्ठ अनुवादक

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं, रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे ।



भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरन्तर प्रयासरत)

सत्यमेव जयते

Azadi Ka Amrit Mahotsav

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केन्द्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते है कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरन्तर निगरानी से अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाए रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे । अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए, अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिन्दी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे । हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावन और निरंतर प्रयासरत रहेंगे ।

जय राजभाषा ! जय हिन्द !

हर राष्ट्र के पास अपना चिन्तन होता है, अपनी भावनाएं होती हैं जिसे वह अपनी भाषा में व्यक्त करता है । मैं, यह मानता हूँ कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, बल्कि उससे बोलने वालों की संस्कृति और संस्कार भी उससे जुड़े होते है । भाषा जहाँ अपनी संस्कृति विरासत से उपजी हुई होती है, वहीं वह इस विरासत को आगे आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाती भी है। इसलिए भाषा का प्रश्न केवल एक अभिव्यक्ति के माध्यम का प्रश्न नहीं है बल्कि, यह हमारी सांस्कृतिक विरासत और हमारे देश के लोगों के संस्कार से भी जुड़ा है । फिर लोकतंत्रात्मक शासन पध्दति में तो भाषा का प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि जनता तभी कामकाज में सक्रिय रुप से भाग ले सकती है, जबकि राजकाज ऐसी भाषा में हो, जिसे वहाँ की जनता अच्छी तरह से समझ सकें ।

– डॉ. शंकर दयाल शर्मा



"पूर्वाशा" वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका

अंक - बत्तीसवाँ

वर्ष : 2022 - 2023

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय		लेखक/लेखिका	पृष्ठ संख्या
.	पूर्वाशा परिवार	.....		(i)
.	राजभाषा प्रतिज्ञा	.....		(ii)
.	महालेखाकार का संदेश	.....		(ix)
.	समाचार-पत्र कतरन	.....		(x)
.	सम्पादकीय	.....		(xi)
.	समाचार-पत्र कतरन	.....		(xii)
.	आपके पत्र	.....		(xiii - xviii)
1.	शिलांग-बादलों के राज्य का खूबसूरत मुकाम	.....	सुश्री शाहनाज बेगम	1-2
2.	जर्नी ऑफ लाइफ	.....	सुश्री मौसमी वैद्य	3
3.	महात्मा गाँधी के बारे में कुछ रोचक तथ्य	.....	श्री विजय छेत्री	3
4.	सुकून-ए-जिंदगी	.....	श्रीमती निवेदिता सुक्लावैद्य	4
5.	साहित्य के समाजशास्त्र की जरूरत	.....	श्री सोनु कुमार साव	5-7
6.	गधे की चतुराई	.....	श्री अंटोन मरबनियांग	8
7.	माँ की ममता	.....	सुश्री बन्दारिशा पिंगरूप	9
8.	काजीरंगा नेशनल पार्क	.....	श्रीमती रोज बेगम	10-11
9.	मेहनत का फल	.....	श्री केरिओनाल्ड पिंगरूप	12
10.	सुविचार	.....	श्रीमती सुमित्रा छेत्री	13
11.	रिश्ता	.....	श्रीमती संदलीन खोंगवीर	13
12.	फूलों की शक्ति	.....	श्रीमती लिसालाई सिएम	14
13.	ऊर्जा	.....	श्री सुमित कुमार	15
14.	पूर्वोत्तर में भाषाएँ और हिंदी	.....	मुहम्मद जियाऊल हक	16-17
15.	संघर्ष भरा जीवन	.....	श्री अमित कुमार वर्मन	18
16.	बचपन	.....	श्रीमती हिमाशुभ्रा चक्रवर्ती	19



क्रमांक	विषय		लेखक/लेखिका	पृष्ठ संख्या
17.	धरती	.....	श्री अभिनंदन गौस्वामी	19
18.	सफलता का मूल मंत्र	.....	श्रीमती मुमताज बेगम	20-21
19.	पेड़ो की कीमत	.....	श्री यश नायक	22
20.	कृष्ण लीलाएं	.....	एक रहस्य चिराग राजपूत	23
21.	छुट्टियों का आनन्द, मुहावरों के सगँ	.....	सुश्री दिया राजपूत	24
22.	एक मुस्कान	.....	श्रीमती रेखा राजपूत	25
23.	चाय की खेती	.....	मुहम्मद अरिफुल हक	26-27
24.	चुटकुले	.....	श्री राजेश कमल राजपूत	28
25.	गरीबी	.....	श्रीमती मिशा	29
26.	चल रे मटके ठम्मक हूँ	.....	श्री शौर्य मिश्रा	30
27.	आजादी	.....	सुश्री स्निग्धा मिश्रा	30
28.	सपनें	.....	श्री संदरसन सुन	31
29.	जग में सबसे प्यारी माँ	.....	श्री दिलीप कुमार क्षेत्री	32
30.	हम सब बच्चे	.....	सुश्री वेरेनिका क्षेत्री	32
31.	सुबह	.....	श्रीमती अनिमा क्षेत्री	33
32.	हिन्दी पखवाड़ा 2022 : एक संक्षिप्त विवरण	.....		34-42
33.	विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के परिणाम	.....		43-44
34.	कार्यालय से सेवा निवृत्त एवं स्वार्गीय कर्मचारियों के विवरण	.....		45

- टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए ।
- मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए ।
- शब्दों के लिए अटकिए नहीं ।
- अशुद्धियों से घबराइए नहीं ।
- अभ्यास अविलम्ब आरम्भ कीजिए ।





हिंदी दिवस 2023

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश



राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

(अमित शाह)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्

ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



संदेश

सत्यमेव जयते



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
मेघालय, शिलांग
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
MEGHALAYA, SHILLONG.

"राष्ट्रभाषा के बिना एक राष्ट्र गूंगा है ।"

– महात्मा गांधी

मेरे प्रिय साथियों,

प्रत्येक वर्ष **14** सितम्बर को हम अपनी राष्ट्र भाषा हिंदी को सम्मानित करते है और हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा मनाते है । देवनागरी लिपि में हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में **14** सितम्बर **1953** के दिन अपनाया गया था ।

मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की उन्नति संभव नहीं है । अतः हिंदी हमारी राजभाषा ही नहीं है बल्कि हमारे देश की उन्नति एवं प्रगति का यह एक प्रेरक प्रतीक है । आज हिंदी हमारे देश की ही नहीं बल्कि अन्य कई देशों के स्कूल एवं कहलेजों में बोली, समझी और पढ़ाई जाती है ।

विविधताओं से भरपूर हमारे देश में अनेक प्रांतीय भाषाओं की फूलवारी प्रतिदिन हमें अपने देश की गौरवमयी परम्प. राओं का स्मरण कराती है । इस फुलवारी को हर तरह से और सुगंधित एवं सुंदर बनाने का काम करती है हमारी राजभाषा हिंदी ।

हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका "पूर्वाशा" का हिंदी पखवाड़े के दौरान प्रकाशन इस पखवाड़े के मुख्य आकर्षणों में से एक है । मुझे अत्यंत हर्ष है कि इस परम्परा को निभाते हुए इस वर्ष भी "पूर्वाशा" का **32** वां अंक हिंदी पखवाड़ा **2023** के मध्य प्रकाशित हो रहा है । इस अंक में सम्मिलित विविध लेखों का योगदान जो हमारे कार्यालय के साथियों और उनके परिवार जनों ने किया है, इस पूरे योगदान को देख कर मैं वास्तव में बहुत प्रसन्न हूँ ।

"पूर्वाशा" के माध्यम से हमारा सदैव अथक प्रयास है कि पूर्वोत्तर सहित पूरे राष्ट्र में हिंदी अधिक से अधिक बोलचाल की भाषा के रूप में लोकप्रिय होती रहे ।

"पूर्वाशा" के सम्पादकीय मंडल एवं हिन्दी कक्ष के स्टाफ को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन पर बधाई देती हूँ । गत वर्षों से "पूर्वाशा" को ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित करने का यह बेहद सराहनीय कार्य है ।

मुझे आशा है कि पाठकगण इस अंक में सम्मिलित लेखों, रचनाओं और कविताओं का भरपूर आनंद लेंगे और अपने बहुमूल्य विचार हम तक पहुँचाएँगे ।

(शेफाली एस. अंदलीब)





प्रेरणा भारती

स्व अनेक ईश्वर एक, भाषाएं अनेक भाव एक- चमूकृष्ण शास्त्री

भव्य ऐतिहासिक राजभाषा सम्मेलन सूरत में हुआ संपन्न

राजभाषा के मंच पर छा गए पुलिस कमिश्नर अजय तोमर

हिंदी दिवस समारोह - 2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

14 - 15 सितंबर / सप्टेंबर, 2022

सेंटिनल
आपकी जुबान में आपके दिल की बात

संयुक्त रूप से मनाया गया हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह



दैनिक पूर्वोदय

सही दिशा, सही खबर

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग नॉर्थ ईस्ट जोन टेटे टूर्नामेंट संपन्न

शिलांग, 30 दिसंबर (खे.सं.)। कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा 28 से 30 दिसंबर तक पूर्वोत्तर क्षेत्र हेतु टेबल-टेनिस टूर्नामेंट का समापन समारोह इंडोर स्टेडियम, जवाहरलाल नेहरू स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, पोलो, शिलांग में आज संपन्न हुआ। इस अवसर पर एस. सामीदुरै, उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग, विनोद भुजेल, कल्याण अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग और पीआर रिंग्ख्लेम, स्थापना अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग उपस्थित थे।



इस अवसर पर सुश्री लीना खरे, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय, नई दिल्ली की ओर से केंद्रीय पर्यवेक्षक के रूप में उपस्थित थीं, जिन्होंने अपने वक्तव्य में टूर्नामेंट को बहुत अच्छी तरह से एवं सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए आयोजक समिति को धन्यवाद दिया। इसके अलावा एस. सामीदुरै, उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग ने अपने वक्तव्य में सभी प्रतिभागी टीमों, तकनीकी अधिकारियों और सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एंड कल्चरल क्लब के सदस्यों को टूर्नामेंट के सफल आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

उक्त टूर्नामेंट में उत्तर-पूर्वी क्षेत्र की निम्नलिखित छह टीमों ने भाग लिया था - 1. ए.जी. -मेघालय, 2. ए.जी.- असम, 3. ए.जी. -मिजोरम, 4. ए.जी. -नगालैंड, 5. ए.जी. - सिक्किम और 6. ए.जी. -त्रिपुरा जिसमें से आज सैदुल आलम अहमद (ए.जी. असम) और मानस घोष (ए.जी. असम) के बीच खिताबी मुकाबला खेला गया। उक्त मुकाबले में सैदुल आलम अहमद (ए.जी. असम) ने मानस घोष (ए.जी. असम) को सर्वश्रेष्ठ 7 मुकाबलों में से प्रथम 4 मुकाबलों में सीधे जीत दर्ज कर ली। सैदुल आलम अहमद (ए.जी. असम) ने फाइनल में मानस घोष (ए.जी. असम) को हराया।

इस अवसर पर सैदुल आलम अहमद, ए.जी. असम, विजेता एवं मानस घोष, ए.जी. असम, उपविजेता के साथ-साथ पूरी ए.जी. असम टीम को एस. सामीदुरै, उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग के करकमलों द्वारा ट्रॉफी, उपहार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। इसके अलावा शेष सभी टीमों के खिलाड़ियों को भी विनोद भुजेल, कल्याण अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग और पीआर रिंग्ख्लेम, स्थापना अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग के करकमलों द्वारा ट्रॉफी, उपहार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। उक्त समारोह का समापन रेमंड वी. खार्कोंगर, महासचिव, सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एंड कल्चरल क्लब के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

आईए और एडी उत्तर पूर्व क्षेत्र टेबल टेनिस टूर्नामेंट में मानस प्रतिम दास और सैदुल आलम अहमद को डबल क्राउन



पूर्वांचल प्रहरी डेस्क संवाददाता

गुवाहाटी : मेघालय के शिलांग में इनडोर स्टेडियम जेएलएन स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में 28 से 30 दिसंबर तक आयोजित आईए एंड एडी उत्तर पूर्व क्षेत्र टेबल टेनिस टूर्नामेंट में प्रधान महालेखाकार असम टेबल टेनिस टीम ने सभी स्पर्धाओं में अपना वर्चस्व दिखाया। पुरुष टीम स्पर्धा में असम ने बाजी मारी और मानस प्रतिम दास और सैदुल आलम अहमद को डबल क्राउन मिला। पुरुष एकल स्पर्धा में सैदुल आलम अहमद ने चैंपियन का खिताब जीता। मानस घोष को उपविजेता और मानस प्रतिम दास को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। महिला एकल स्पर्धा में अमांडा लिंग्सकोर उपविजेता बनी। इसके अलावा 40+ स्पर्धा में मानस प्रतिम दास को चैंपियन का खिताब प्राप्त हुआ। असम की टीम ने 9 से 11 जनवरी 2023 तक अहमदाबाद, गुजरात में आयोजित होने वाले अखिल भारतीय आईए और एडी टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई किया।

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग, नॉर्थ ईस्ट जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट 2022-23 का आयोजन



शिलांग : कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा दिनांक 28 से 30 दिसम्बर, 2022 तक पूर्वोत्तर क्षेत्र हेतु टेबल-टेनिस टूर्नामेंट 2022-23 के दूसरे दिन 29 दिसंबर, 2022 का खेल इंडोर स्टेडियम, जवाहरलाल नेहरू स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, पोलो, शिलांग में संपन्न हुआ। इस टूर्नामेंट में उत्तर-पूर्वी क्षेत्र की कुल छह टीमों ने भाग लिया है।

सम्पादकीय



(सागर विजय काळे)
सम्पादक एवं
उप महालेखाकार (प्रशासन)

हिन्दीतर भाषी क्षेत्र से हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन हिन्दीतर भाषी लोगों की राजभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठा, लगन एवं समर्पण को दर्शाता है, जोकि राजभाषा हिन्दी के लिए सचमुच गर्व का विषय है । पत्रिका एक साधन है जो भाषा के द्वारा स्थानीय संस्कृति तथा संस्कारों की खुशबू बिखेरती है । भाषा के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती क्योंकि भाषा का संबंध संस्कृति और संस्कारों से है । इसके अलावा यह हमारी जीवन शैली एवं रीति-रिवाज से भी जुड़ी हुई है । हिन्दीतर क्षेत्र में स्थित पूर्वोत्तर क्षेत्र के मेघालय, शिलांग की वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "पूर्वाशा" के जरिए न केवल हम राजभाषा को बढ़ावा देने का प्रयास करते है, अपितु मेघालय की प्रकृति व मनोरम दृश्यों से भी परिचित कराने का प्रयास करते हैं ।

हिन्दी भाषा विश्व की तमाम भाषाओं में से एक मधुर तथा वैज्ञानिक भाषा है । भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त हिन्दी में पत्रिका प्रकाशित करने से हिन्दी अपना संदेश लिए बृहत्तर क्षेत्र तक सहजता से पहुँचती है । यह पत्रिका एक साधन है, जो हमारे विचारों को वाणी देने तथा लिपिबद्ध करने का कार्य करती है । "पूर्वाशा" के माध्यम से हमारा निरन्तर प्रयास बना रहेगा कि पूर्वोत्तर सहित पूरे राष्ट्र में हिन्दी का उत्तरोत्तर विकास होता रहे तथा हिन्दी के प्रति सभी अपनी निष्ठा बनाए रखें ।

हिन्दी के प्रति हमारा लगाव एवं साहित्य के प्रति रूचि के फलस्वरूप "पूर्वाशा" को आसान और रोचक एवं तथ्यपरक रूप से सँवारने की हमारी कोशिश में अधिक निखार लाने हेतु आपके सुझाव एवं मार्गदर्शन अपेक्षित है ।

शुभकामनाओं सहित,

सागर काळे

(सागर विजय काळे)



नवभारत Odisha Patrika - 09 Dec 2022 - 09bsrp1

भारत की अपनी भाषा है हिन्दी, स्थानीय भारतीय भाषाओं की सहोदरी - अजय कुमार

नवभारत ब्यूरो । भुवनेश्वर।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सीएसआईआर-खनिज एवं पदार्थ प्रौद्योगिकी संस्थान, आचार्य विहार, भुवनेश्वर ओडिशा में पूर्व तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रों में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों एवं उपक्रमों इत्यादि के लिए संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में मंचासीन अतिथियों के कर-कमलों से केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों एवं उपक्रमों को विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु पुरस्कार प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम में केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री अजय कुमार मिश्र, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय डॉ मीनाक्षी जौली, नराकास बैंक, भुवनेश्वर के मुख्य महाप्रबंधक चन्द्रशेखर शर्मा, गुवाहाटी रिफाइनरी के मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन) हितजीत भट्टाचार्य मंचासीन थे। समारोह की अध्यक्षता करते हुए केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री अजय कुमार मिश्र ने कहा कि हिन्दी भारत के जनमानस के महत्वता से समझने वाली भाषा है, केवल कुछ राजनैतिक कारणों से हिन्दी का विरोध किया जाता है। ऐसा वातावरण बनाया जाता है कि हिन्दी अन्य स्थानीय भाषाओं को समाप्त कर देगी, मगर हिन्दी भारत की अपनी भाषा है, जो अन्य स्थानीय भारतीय भाषाओं की सहोदरी है। उनका कहना था कि किसी प्रांतीय भाषा से हिन्दी का विरोध या प्रतिस्पर्धा नहीं है।

हिन्दी अनुवाद की नहीं वरन संवाद की भाषा - भृर्तहरि महताब

कार्यक्रम में बोलते हुए सम्मानित अतिथि संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भृर्तहरि महताब ने कहा कि हिन्दी अनुवाद की नहीं वरन संवाद की भाषा है। महताब ने पुरस्कार विजेताओं का स्वागत करते हुए कहा कि इनके प्रयास इन्हें पुरस्कार के पात्र बनाते हैं अतः उनसे प्रेरणा लेते हुए अन्य कार्यालय भी हिन्दी में उत्तम कार्य करें ताकि अगली बार वे पुरस्कार के पात्र बनें।

कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण

मिश्र ने बताया कि राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली स्वर्कउठस्थान का निर्माण और विकास किया है, जिसका प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। इस टूल में अब तक लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं और पिछले दिनों सूरत में संपन्न हुए राजभाषा सम्मेलन में गृह मंत्री द्वारा इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) का लोकार्पण भी किया गया है जिसमें अब न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन के साथ-साथ और भी अनेक नए फीचर्स जोड़े गए हैं जिससे इसकी उपयोगिता और भी ज्यादा बढ़ गई है। विभाग द्वारा ही ई-महाशब्दकोश तथा अन्य तकनीकी माध्यमों से भी हिंदी को सशक्त किया जा रहा है।

संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित



हिंदी प्रयोग को बढ़ाया देने में राजभाषा विभाग अहम भूमिका - मीनाक्षी जौली

अपने स्वागत संबोधन में राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय डॉ मीनाक्षी जौली ने बताया कि पूरे देश में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों एवं कार्यालयों आदि में राजभाषा संबंधी प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करने तथा सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग उल्लेख भूमिका निभाता है। राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधानों का अनुपालन करने एवं सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा विभाग सतत प्रयासरत है और हमारे ये क्षेत्रीय सम्मेलन भी उसी दिशा में किए जाने वाले हमारे प्रयास हैं। उनका कहना था कि राजभाषा विभाग द्वारा भी राजभाषा हिंदी के प्रयोग में तकनीक को निरंतर बढ़ावा दिया जा रहा है।

लीला हिंदी प्रवाह मोबाइल ऐप से सीखें हिन्दी

अमृत महोत्सव के अवसर पर जारी इस शब्दकोश को विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पाकशास्त्र तथा व्यवसाय आदि क्षेत्रों से तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं से प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए तैयार किया गया है जो कि अपने पहले संस्करण में मूलभूत संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश के तौर पर कारगर होगा। इसी प्रकार विभाग द्वारा जन-साधारण के लिए तैयार किए गए लीला हिंदी प्रवाह मोबाइल ऐप का प्रयोग करके विभिन्न भाषा-भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी-अपनी मातृभाषाओं से सरलीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के ल्यर्न-महाशब्दकोशण में लगभग 90 हजार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और ल्यर्न-सरलल्प हिंदी शब्दकोश में भी अब तक 11 हजार से ज्यादा वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। ये सभी साधन विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं और ये सभी ऐप्स भी अनुरोध करते हुए कि आप इनका प्रयोग करके राजभाषा विभाग को अपना फीडबैक जरूर दें जिससे हम आवश्यकतानुसार आगे भी इनमें निरंतर सुधार कर सकें।

नई पहल है 'हिंदी शब्द सिंधु'

राजभाषा विभाग की एक नई पहल है 'हिंदी शब्द सिंधु' जिसका लोकार्पण गृह मंत्री के करकमलों से सूरत में संपन्न हुआ है और जिसमें अब तक लगभग 51,000 शब्दों को शामिल किया जा चुका है और इसे विभाग द्वारा नियत अपडेट किया जा रहा है और नए-नए शब्दों को शामिल कर उसे समृद्ध किया जा रहा है।

सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग पर दें विशेष बल

कार्यक्रम में बोलते हुए नराकास बैंक, भुवनेश्वर के मुख्य महाप्रबंधक चन्द्रशेखर शर्मा, गुवाहाटी रिफाइनरी के मुख्यमहाप्रबंधक (मानव संसाधन) हितजीत भट्टाचार्य ने सरकारी कामकाज में अधिक हिन्दी के प्रयोग पर विशेष बल दिया और अपने अपने कार्यालयों में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने की बात कही। पूर्वी क्षेत्र के राजभाषा कार्यान्वयन उप-निदेशक विनिल दुबे एवं उत्तरपूर्व क्षेत्र के राजभाषा कार्यान्वयन सहायक निदेशक सही खटपे ने राजभाषा के कार्यान्वयन संबंधी जानकारी प्रस्तुत की।

पूर्वोत्तर भारत शिलचर (असम) से प्रकाशित

प्रेरणा भ

Postal Registration No. L1-5/RN-Sc-36/2023-25 (RNI No.) ASSHIN/2016/69550 अंक - 2

भारत के संस्कृतिक विरासत की संवर्धन करने वाली भाषा हिंदी: आरिफ मोहम्मद खान राज्यपाल केरल

अखिल भारतीय राज भाषा सम्मेलन पुणे के दूसरे दिन



ने.सं.शिलचर, १५ सितंबर : आरिफ मोहम्मद खान (माननीय राज्यपाल केरल) मुख्य अतिथि के रूप उपरांत ये । अपने उद्धोधन में इन्होंने कहा कि पुरातन धर्म और दर्शन से जुड़ी हैं हिंदी भाषा । राज्यपाल जी ने अपने चुके संस्मरण साझा किया और बताया कि उन्हें पहली केन्द्रीय हिंदी समिति का सदस्य कमलापति त्रिपाठी के साथ बनाया गया था, जो मेरे लिए सौभाग्य की बात थी। उन्होंने सभी से अपील किया कि हिंदी के प्रोत्साहन एवम संवर्धन में सहयोग करें । संविधान में उल्लिखित हिंदी के घराओं का का भी उल्लेख किया। श्री आरिफ मुहम्मद खान ने आगे कहा कि अपने प्यारे नरसरी के सपनो को पूरा करने के लिए हर भाषाओं को विकास करने का पूर्ण अवसर के साथ राष्ट्रीय स्तर पर एक भाषा होनी चाहिए हिंदी होगी। एक भाषा की उद्देश्य की पूर्ति के लिए केन्द्रीय हिंदी संस्था बनाई गई है । विभिन्न राज्यों में बोले जानी वाली भाषाओं का साहित्य सम्मृद्ध है , इन्होंने राज भाषा विभाग की सराहा की। प्रशनिय संस्कृति का संरक्षण भाषाओं के बजह से हो पाई हैं। हमे अधिक से अधिक भाषाओं को सीखना चाहिए । सभको मिल कर प्रयास करने से हिंदी राजभाषा से उपर उठकर राज भाषा बन सकती हैं। प्रसिद्ध विद्वान चम् कृष्ण शास्त्री (अध्यक्ष केन्द्रीय भाषा संस्थान) ने अपने उद्धोधन में बताया कि जबसे व्यवहार के सभी माध्यम में हिंदी आगशक्त हैं। इन्होंने आगे कहा कि जब तक लोगों के मानसिकता नहीं बदलेगी तब तक सरकारी के प्रयास योगदान हैं। अंतर्राष्ट्रीय संघों पर इनका प्रयोग बढ़ा हैं। संघ की राजभाषा हिंदी वास्तविक संवाद का माध्यम बने।

शेषांश पृष्ठ 3 पर

भारतीय लेखापरीक्षा व लेखा विभाग नॉर्थ ईस्ट जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट संपन्न



शिलांग, 30 दिसंबर। पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए टेबल-टेनिस टूर्नामेंट 2022-23 का समापन समारोह इंडोर स्टेडियम, जवाहरलाल नेहरू स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, पोलो, शिलांग में आज आज संपन्न हुआ। इस अवसर पर एस सामीदुरै, उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग, बिनोद भुजेल, कल्याण अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग और पीआर रिंग्खलेम, स्थापना अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग उपस्थित थे। इस अवसर पर लीना खरे, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय, नयी दिल्ली की ओर से केंद्रीय पर्यवेक्षक के रूप में उपस्थित थी, जिन्होंने अपने वक्तव्य में टूर्नामेंट को बहुत अच्छी तरह से एवं सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए आयोजन समिति को धन्यवाद दिया। इसके अलावा एस सामीदुरै, उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग ने अपने वक्तव्य में सभी प्रतिभागी टीमों, तकनीकी अधिकारियों और सिविल ऑडिट स्पोर्टस एंड कल्चरल क्लब के सदस्यों को टूर्नामेंट के सफल आयोजन के लिए धन्यवाद दिया । उक्त टूर्नामेंट में पूर्वोत्तर क्षेत्र की निम्नलिखित छह टीमों ने भाग लिया था, जिसमें एजी-मेघालय, एजी-असम, एजी-मिजोरम, एजी-नगालैंड, एजी-सिक्किम और एजी-त्रिपुरा शामिल है, जिसमें से आज आज सैदुल आलम अहमद (एजी-असम) और मानस घोष (एजी-असम) के बीच फाइनल मुकाबला खेला गया। उक्त मुकाबले में सैदुल आलम अहमद (एजी-असम) ने मानस घोष (एजी-असम) को सर्वश्रेष्ठ 7 मुकाबलों में से प्रथम 4 मुकाबलों में सीधे जीत दर्ज कर ली।

दैनिक पूर्वोदय

सही दिशा, सही खबर

1 October, 2022, dainikpurvoday.com गुवाहाटी-जोहाट से एक साथ प्रकाशित A ROYAL GROUP PUBLICATION वर्ष : 18, अंक : 165, विक्रम सं. 2079, आश्विन मास, शुक्ल पक्ष 6, गुवाहाटी, शनिवार, 1 अक्टूबर, 2022

ASSHIN/2005/15049 PRATAH KHABAR, Guwahati, Saturday, 1 October, 2022

सच से समझौता नहीं

प्रातः खबर

राज्यभर में हिंदी पखवाड़े का सफल समापन



मेघालय : हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह संयुक्त रूप से मनाया







▲ पूर्वोदय संवाददाता

शिलांग, 30 सितंबर। कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), नगालैंडकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग और क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से गत 29 सितंबर को कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह किया गया। हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन श्रीमती शेकाली एस अंदलीय, महालेखाकार ने किया।

इस मौके पर डॉ. डी अनीता, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ने तीनों कार्यालयों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए राजभाषा से संबंधित विविध जानकारियां दीं।

साथ ही कार्यालय में हिंदी का प्रयोग अधिकाधिक करने की अपील की। उन्होंने कहा कि हिंदी पखवाड़े के आयोजन का मुख्य उद्देश्य गैर-हिंदी भाषी कर्मियों को हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हिंदी भाषा में दक्ष बनाना है। उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा बताए गए चारह (12) 'प्र' के महत्वपूर्ण स्तंभों के आधार पर सभी कार्मिक सरकारी कार्य को सरल एवं सहज हिंदी में करने के प्रयास के भी रेखांकित किया।

इस दौरान कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) व कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक हिंदी ई-पत्रिकाओं क्रमशः पूलांता के 3री अंक और नवीन पूर्वांचल संदेश के 17वें अंक के विमोचन भी किया गया। कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की पूर्वत्ता पत्रिका के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय विजेताओं क्रमशः सुजीत कुमार दास, श्रीमती एल पिंगते और सुश्री साधना कुमारी को प्रमाण-पत्र दिए गए।

साथ ही विभिन्न हिंदी प्रवियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के रूप में उपहार एवं प्रमाण-पत्र समूह अधिकारियों ने बांटे। मौके पर प्रश्नोत्तरों और आशु भाषण प्रतियोगिता भी हुई, जिनके विजेताओं को उपहार दिए गए।

हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग के उप महालेखाकार (एएमजी-1 व 3), सागर विजय काले के कन्यत्व आपन और राष्ट्रगान के साथ किया गया।



आपके पत्र

1. पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज-सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक है । आपका कार्यालय "ग" क्षेत्र में होने के वाबजूद हिंदी के प्रति इतनी लगाव अत्यन्त ही सराहनीय है । विशेष रूप से श्रीमती मुमताज बेगम जी द्वारा लिखी गई लेख "भारत की सामाजिक समस्याएँ" अत्यंत पठनीय है । आशा है कि यह पत्रिका कार्यालयी काम-काज के लिए उपयोगी सिद्ध होगी ।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) - I
पश्चिम बंगाल

2. पत्रिका की साज-सज्जा एवं मुद्रण उच्च कोटि का है । पत्रिका में सहभागिता से कार्मिकों की सृजनात्मक सोच में वृद्धि के साथ ही राजभाषा के प्रचार और प्रसार को बल मिलता है । पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए ढेरों शुभकामनाएँ। आशा है कि आपकी पत्रिका "पूर्वाशा" इसी तरह प्रगति की ओर अग्रसर रहे ।

ह/-
(अरूण कुमार शर्मा)
कल्याण अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) - I
राजस्थान, जयपुर

3. पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं । विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यन्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है । पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)
प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं
पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, बेंगलोर

4. पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है । पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है । इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं । पत्रिका में मुहम्मद जियाऊल हक की रचना "कैसे बनाएं कार्यालय में अपनी बेहतर छवि", सुश्री मीरा देवी की रचना "सफलता का रहस्य", श्री विनोद भुजेल की रचना "नोहकलिकाई फह्त्स का नाम कैसे पड़ा ?", श्री रितेश कुमार की रचना "ई-ऑफिस फाइल प्रबंधन प्रणाली का भविष्य", सुश्री मधु कुमारी गुप्ता की रचना "हिंदी की लोकप्रियता", श्री विनोद कुमार की रचना "नई पीढ़ी में धेर्य एवं सहनशीलता का अभाव", श्री सोनू कुमार साव की रचना "मनुष्य, वर्णों एवं वर्गों में", सुश्री शाहनाज बेगम की रचना "प्लास्टिक वरदान या एक अभिशाप", सुश्री तारा देवी सुनार की रचना "मीडिया के शिकंजे में फंसते बच्चे", श्रीमती मुमताज बेगम जी द्वारा लिखी गई लेख "भारत की सामाजिक समस्याएँ", श्री राजेन्द्र प्रसाद की रचना "धोनी का टिकट कलेक्टर से देश की धड़कन बनने तक का सफर", श्री दीपक कुमार की रचना "गीत नफरत का हमने कभी कोई गाया नहीं", मुहम्मद अरिफुल हक की रचना "औरत के हिस्से में इतवार नहीं आती" और श्री सुजीत कुमार दास की रचना "जमीन पर जन्नत (माँ)" आदि की रचनाएं विशेष रूप से ध्यानाकर्षित



करती है । प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर पत्रिका के मुख पृष्ठ पर दृश्य बहुत ही आकर्षक है । पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर भी प्राकृतिक दृश्य बहुत ही सुंदर है । निसंदेह, भारत के उत्तर पूर्व के सभी राज्य प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है । पत्रिका में कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती है । पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई ।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्ही शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी - हिन्दी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
गुजरात, राजकोट

5. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं । हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है ।

ह/-
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

श्री सुजीत कुमार दास की रचना "जमीन पर जन्नत (माँ)"

6. पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है । विशेषकर श्री सोनू कुमार साव, कनिष्ठ अनुवादक का लेख "मनुष्य वर्णों एवं वर्गों में", श्रीमती मीरा देवी, माँ - श्री रितेश कुमार, स.ले.प.अ. का लेख "सफलता का रहस्य" तथा श्री दीपक कुमार, लेखापरीक्षक, की रचना "गीत नफरत का हमने कभी कोई गाया नहीं" उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं । पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ ।

ह/-
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), महाराष्ट्र, नागपूर

7. पत्रिका में सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं । विशेष तौर पर मुहम्मद जियाऊल हक की रचना "कैसे बनाएं कार्यालय में अपनी बेहतर छवि", श्री रितेश कुमार की रचना "ई-अहफिस फाइल प्रबंधन प्रणाली का भविष्य", श्रीमती रोज बेगम जी द्वारा लिखी गई लेख "बाढ़, श्री सुमित कुमार वर्मण का लेख "परिस्थितियां और विचार", श्रीमती लेविस नामप्ली "सफेद गुलाब का गुलदस्ता" आदि रचनाएं सारगर्भित एवं सराहनीय हैं ।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है । कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई । पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
मध्य प्रदेश, भोपाल



8. पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है । पत्रिका में समाहित सभी लेख व कविताएं पठनीय व सराहनीय है । विशेष रूप से "मीडिया के शिकंजे में फँसते बच्चे", "जिम की लोकप्रियता" एवं "भारत की सामाजिक समस्याएँ" आदि रचनाएं प्रशंसनीय है । पत्रिका की उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

ह/-
वरिष्ठ लेखाधिकारी ६ मा.सं.वि.
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
कर्नाटक, बेंगलूरू

9. रचनाओं के चयन की दृष्टि से यह अंक अत्यंत ही सराहनीय हैं । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, सुरूचिपूर्ण एवं पठनीय हैं । विशेष रूप से पर मुहम्मद जियाऊल हक की रचना "कैसे बनाएं कार्यालय में अपनी बेहतर छवि", श्री रितेश कुमार की रचना "ई-ऑफिस फाइल प्रबंधन प्रणाली का भविष्य", श्रीमती मधु कुमारी गुप्ता की रचना "जिम की लोकप्रियता", श्री विनोद कुमार का लेख "नई पीढ़ी में धैर्य एवं सहनशीलता का अभाव", श्रीमती तारा देवी सुनार की रचना "मीडिया के शिकंजे में फँसते बच्चे", श्री सुजीत कुमार दास की रचना "जमीन पर जन्नत (माँ)" तथा श्रीमती एल. थिएते की रचना "एक कविता मेरे देश के नाम" आदि रचनाएं अति प्रेरणादायी एवं प्रशंसनीय हैं ।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों तथा संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी - हिन्दी व प्रशिक्षण कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा

10. इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रूचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं । पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है । कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक हैं ।

श्रीमती तारा देवी सुनार की रचना "मीडिया के शिकंजे में फँसते बच्चे", श्रीमती मुमताज बेगम जी द्वारा लिखी गई लेख "भारत की सामाजिक समस्याएँ" श्री दीपक कुमार, लेखापरीक्षक, की रचना "गीत नफरत का हमने कभी कोई गाया नहीं" एवं श्री सुजीत कुमार दास की रचना "जमीन पर जन्नत (माँ)" विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं ।

पत्रिका को सुरूचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय परिवार को बधाई । पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं ।

ह/-
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब, चंडीगढ़

11. पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है । सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला



12. पत्रिका के इस अंक का आवरण पृष्ठ मेघालय राज्य के रमणीय पर्यटक स्थलों पर केन्द्रित है । पत्रिका में स्तरीय रचनाओं को संकलित किया गया है । विशेषकर मुहम्मद जियाऊल हक का लेख "कैसे बनाएं कार्यालय में अपनी बेहतर छवि", श्री रितेश कुमार की रचना "ई-ऑफिस फाइल प्रबंधन प्रणाली का भविष्य", श्रीमती मधु कुमारी गुप्ता की रचना "जिम की लोकप्रियता", सुश्री शाहनाज बेगम "प्लास्टिक वरदान या अभिशाप" शीर्षक विशेष रूप से उल्लेखनीय है । इस अंक में कार्यालय की विविध गतिविधियों से संबंधित चित्रों का भी सुंदर संयोजन किया गया है ।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के अभियान को गति प्रदान करने में "पूर्वाशा" महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन कर रही है । पत्रिका निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, इसी कामना के साथ पत्रिका परिवार को अनेक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

13. पत्रिका में सम्मिलित विभिन्न विषयों से संबंधित रचनाएँ भिन्न-भिन्न विषयों के संबंध में जानकारी प्रदान करती हैं तथा विषयों से संबंधित छायाचित्र अत्यंत सार्थक हैं । विभिन्न गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र का प्रस्तुतीकरण सराहनीय है । पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)
कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

14. इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक है, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय है । श्रीमती तारा देवी सुनार की रचना "मीडिया के शिकंजे में फसते बच्चे", श्रीमती मुमताज बेगम की रचना "भारत की सामाजिक समस्याएँ", श्री पावन कुमार की रचना "बाजारू", मुहम्मद अरिफउल हक की रचना "औरत के हिस्से में इतवार नहीं आती", श्रीमती मधु कुमारी गुप्ता की रचना "जिम की लोकप्रियता" । इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटी बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं ।

ह/-
कीर्ति श्री
हिन्दी अधिकारी
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन, भुवनेश्वर, ओडिशा

15. पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं छायाकन अति आकर्षक है । पत्रिका की सभी रचनाए उत्कृष्ट कोटि की है । विशेषकर 'कैसे बनाए कार्यालय में अपनी बेहतर छवि "ई ऑफिस : फाइल प्रबंधन प्रणाली का भविष्य", 'हिन्दी की लोकप्रियता' 'इंतजार व्यथा मजदूर की' "एक कविता मेरे देश के नाम' एवं", "जमीन पर जन्नत - माँ" रचनाए सराहनीय एवं संग्रहणीय है । एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को बखूबी समाहित किया गया है जो उल्लेखनीय है । कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका में चार - चाँद लगा रहे है ।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

ह/-
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), ओडिशा, भुवनेश्वर



16. पत्रिका में निहित सभी रचनाए अत्यंत ही अच्छी है । पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु समदपक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी - हिन्दी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखंड, रांची

17. पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है । साथ ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है । कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली है । इनमे से जो रचनाएं अति उत्तम लगी, वो है दृ "सफलता का रहस्य", "मीडिया", "बाजारू" आदि ।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मक में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी - हिन्दी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

18. पत्रिका की सभी रचनाए रोचक एवं ज्ञानवर्धक है । आशा है पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी । पत्रिका की शुभकामनाएं ।

ह/-
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
असम, बेलतला, गुवाहाटी - 781029

19. इस अंक मे मेघालय की विविधताओं का जो अद्भुत एवं सजीव वर्णन किया गया है । पत्रिका में पूर्वोत्तर की सांस्कृतिक विविधता को केंद्र मे रखते हुये वृहद जानकारी उपलब्ध करायी गयी है, जो अत्यंत ज्ञानवर्धक है ।

पूर्वशा पत्रिका का यह अंक राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने में पत्रिका ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ समस्त संपादक मंडल एवं पत्रिका परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी-हिन्दी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



20. पत्रिका की सभी रचनाए प्रभावशाली एवं ज्ञानवर्धक है । इसमे श्रीमती रोज बेगम की 'बाढ़', श्री विनोद कुमार की 'नई पीढ़ी में धैर्य एवं सहनशीलता अभाव' तथा श्रीमती लेविस नम्ली की 'सफेद गुलाब का गुलदस्ता' आदि रचनाए विशेष रूप से ज्ञानवर्धक व रुचिकर है । पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल के सदस्यों को हार्दिक बधाई।

पत्रिका की उतरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाए ।

ह/-
मेरीना सिमते
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्वोत्तर सीमांत रेल, मालीगाँव, गुवाहाटी

21. पत्रिका का मुख पृष्ठ व साज-सज्जा खूबसूरत व मनमोहक है । पत्रका का बाहरी व भीतरी साज-सज्जा पत्रिका को विशिष्ट बना रहे है । पत्रिका में समाहित सभी रचनाओ में रचनात्मक, सकारात्मक एवं नवीन विचारों की छवि पलक्षित होती है ।

कार्यालय में सम्पन्न विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों से पत्रिका की शोभा बढ़ी है । पत्रिका के माध्यम से आपके कार्यालय में राजभाषा हिन्दी की दशा व दिशा में सकारात्मक प्रयास परिलक्षित होंगे ।

पत्रिका को सफर एवं उच्चकोटी बनाने के लिये रचनाकारों को एवं संपादक मंडल को बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिये हार्दिक शुभकामनाएं ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी-II)
महाराष्ट्र, नागपुर - 440 001

22. 'पूर्वशा' राजभाषा के प्रचार-प्रचार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियोंध्कर्मचारियों की हिन्दी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है । विशेषकर श्री विनोद भुजेल जी का लेखन 'नोहकलिकाई फाल्स का नाम कैसे पड़ा ?', श्री रितेश कुमार जी का आलेख 'ई ऑफिस : फाइल प्रबंधन प्रणाली का भविष्य', श्री विनोद कुमार की 'नई पीढ़ी में धैर्य एवं सहनशीलता अभाव', श्री दीपक कुमार जी की कविता 'गीत नफरत का हमने कभी कोई गाया नहीं', श्री सुजीत कुमार दास जी की कविता 'जमीन पर जन्नत माँ' और श्रीमती एल. थियते जी की कविता 'एक कविता मेरे देश के नाम अत्यंत ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय है । इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति लोगो में निश्चत ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा । पत्रिका की साजदृसज्जा और अंतर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम है ।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका पूर्वशा के उज्ज्वल भविष्य के लिए आकांक्षा परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं ।

ह/-
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,पर्यावरण एवं वैज्ञानिक शाखा
कोलकाता - 700 020





श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा) , मेघालय, शिलांग को हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर गुलदस्ता भेंट करती हुई श्रीमती प्रिया साव, कनिष्ठ अनुवादक, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग ।



श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली, वरिष्ठ अनुवादक, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर कार्यक्रम का संचालन करती हुई ।



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा) , मेघालय, शिलांग को हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर खासी शौल ओढ़ाती हुई सुश्री स्निग्धा फुकन, हिंदी अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग ।



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा) , मेघालय, शिलांग हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्वलित करती हुईं।



डॉ. डी. अनिश, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए।



महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए।





श्री एस. सामीदुरै, उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।



डॉ. डी. अनिश, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर स्वागत भाषण देते हुए ।



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा) के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तथा कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग की वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "पूर्वाशा" और "नवीन पूर्वांचल संदेश" के डिजिटल लोकार्पण की एक झलक ।



मुहम्मद जियाऊल हक, वरिष्ठ अनुवादक, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2022 के अवसर पर गृह मंत्री, भारत सरकार का संदेश पाठ करते हुए ।



हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर नृत्य प्रस्तुत करती हुई बच्ची ।



हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर कार्यक्रम का आनंद लेते हुए तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ।





हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर गीत प्रस्तुत करती हुई सुश्री आरती शर्मा ।



हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर नृत्य प्रस्तुत करती हुई सुश्री प्रार्थना सोनार ।



हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के उपरांत कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) एवं हिन्दी शिक्षण योजना, मेघालय, शिलांग के स्टाफ की एक झलक ।



हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर नृत्य प्रस्तुत करती हुई बच्ची ।



हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर गीत प्रस्तुत करते हुए श्री संतोष कुमार, लेखापरीक्षक, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग ।





श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा) , मेघालय, शिलांग हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर अभिभाषण देती हुईं ।



श्रीमती प्रिया साव, कनिष्ठ अनुवादक, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर श्रोताओं के लिए आयोजित आशु भाषण प्रतियोगिता हेतु श्रोताओं को मंच पर आमंत्रित करती हुईं ।



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) , मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर विभागीय राजभाषा रनिंग शील्ड प्राप्त करते हुए श्री ए. मैथ्यू, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, ए.एम.जी.-I अनुभाग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



डॉ. डी. अनिश, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) , मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री संतोष कुमार, लेखापरीक्षक और सुश्री आरती शर्मा, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



श्री सागर विजय काळे, उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करती हुई श्रीमती बाएदा लांग्स्टे, लेखापरीक्षक, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



श्री एस. सामीदुरै, उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करती हुई कर्मचारी की बच्ची।





श्री बिनोद भुजेल, कल्याण अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करती हुई श्रीमती डेटीमोन खरबामोन, वरिष्ठ लेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग।



श्री पी.आर. रिंग्ख्लेम, स्थापना अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करती हुई सुश्री लानाफिका लिंग्डोह, लेखापरीक्षक, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के अवसर पर कार्यक्रम के समापन समारोह में राष्ट्र गान प्रस्तुत करते हुए तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ।





हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह के उपरांत जलपान करते हुए तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ।



दिनांक 08/12/2022 को भुवनेश्वर में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर मंचासीन केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री अजय कुमार मिश्र, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भृर्तहरि महताब, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय डॉ. मीनाक्षी जौली, नराकास बैंक, भुवनेश्वर के मुख्य महाप्रबंधक, श्री चन्द्रशेखर शर्मा, गुवाहाटी रिफाइनरी के मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन), श्री हितजीत भट्टाचार्य ।



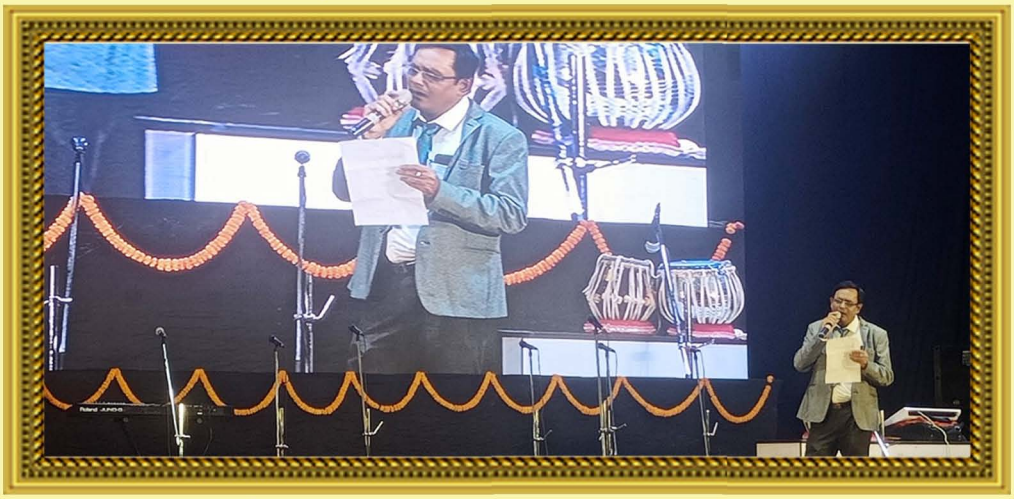
दिनांक 08/12/2022 को भुवनेश्वर में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर अभिभाषण देती हुईं संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, डॉ. मीनाक्षी जौली ।



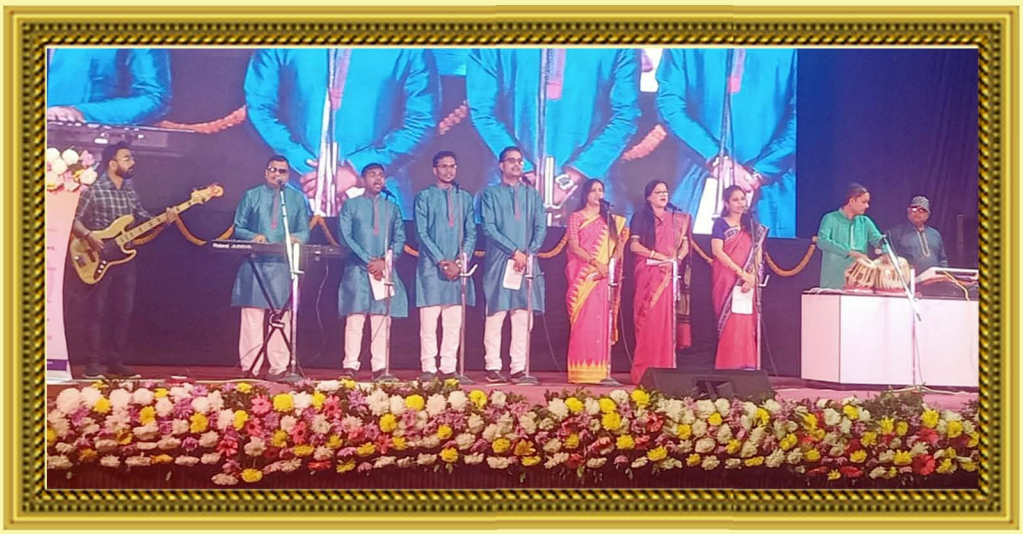
दिनांक 08/12/2022 को भुवनेश्वर में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर शील्ड एवं प्रमाण-पत्र प्रदान करने की एक झलक ।



दिनांक 08/12/2022 को भुवनेश्वर में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रो के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की एक झलक ।



दिनांक 08/12/2022 को भुवनेश्वर में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रो के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर गीत प्रस्तुति की एक झलक ।



दिनांक 08/12/2022 को भुवनेश्वर में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रो के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर सामुहिक गीत प्रस्तुति की एक झलक ।



दिनांक 08/12/2022 को भुवनेश्वर में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रो के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर कार्यक्रम का आनन्द लेते हुए माननीय गृह राज्य मंत्री एवं अन्य विशिष्ट अतिथिगणों की एक झलक ।





दिनांक 08/12/2022 को भुवनेश्वर में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रो के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर इस कार्यालय के स्वर्गीय एल. सिमते, हिंदी अधिकारी और मुहम्मद जियाऊल हक, वरिष्ठ अनुवादक ।



शिलांग-बादलों के राज्य का खूबसूरत मुकाम



सुश्री शाहनाज बेगम,
बहन - मुहम्मद जियाऊल हक,
वरिष्ठ अनुवादक

आम तौर पर जब हिल स्टेशनों का जिक्र होता है तो मसूरी, शिमला, नैनीताल, ऊटी, माउन्ट आबू, श्री नगर, पहलगांव, डलहोजी के नामों के बीच शिलांग का नाम कम ही आता है । कारण इसका सुदूर उत्तर-पूर्व में स्थित होना है। जहाँ शेष भारत के पर्यटक कम ही पहुँच पाते हैं । इसकी स्कॅटलैंड जैसी बनावट व ताजा वातावरण के चलते इसे स्कॅटलैंड ॲफ ईस्ट कहा जाता हैं।



गुवाहाटी, सिक्किम को छोड़ अन्य सभी उत्तर पूर्वी राज्यों त्रिपुरा, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड का प्रवेश द्वार है, लेकिन यहाँ से मेघालय की राजधानी शिलांग जितनी करीब है, अन्य राज्यों की नहीं। शिलांग कभी बृस्तर असम की राजधानी थी, फिर मेघालय के केन्द्र शासित प्रदेश बनने एवं 1972 के बाद के बाद नए राज्य मेघालय की राजधानी बन गया ।

गुवाहाटी रेलवे स्टेशन के एक ओर स्थित पलटन बाजार ही वह स्थान है जहाँ से शिलांग का सफर आरम्भ होता है। यहाँ से दस कि. मी. दूर जोराबाट राजमार्ग संख्या 37 जहाँ पूर्वी व दक्षिण पूर्व असम और आगे अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड के लिए चला गया है, तो यहीं से राजमार्ग संख्या 40 शिलांग होते हुए असम के कछार क्षेत्र से मणिपुर, मिजोरम व त्रिपुरा के लिए निकलता है । गुवाहाटी से शिलांग तकरीबन 100 किमी की दूरी पर है और यहाँ आने पर सब कुछ इतना बदल जाता है कि यकीन ही नहीं आता है । गुवाहाटी में जहाँ आप अपने आप को पहाड़ियो से घिरा पाते हैं वही शिलांग में पहाड़ियों के बीच पहनावे, कुदरत के नजारे, जलवायु, इमारतों की शैली, खान-पान और भाषा सब कुछ इतना बदल जाते हैं, जो कि एक नएपन का अहसास दिलाते हैं ।

उत्तरपूर्व में कठिन भौगोलिक स्थिति के कारण इस क्षेत्र में रेल का विस्तार कम होने से, परिवहन तंत्र सड़क पर ही निर्भर करता है । मेघालय भी इसका अपवाद नहीं हैं । इसलिए यहाँ का हर राजमार्ग वाहनों के दबाव से जूझता रहता है । सामान्यतः बस या टैक्सी से शिलांग का सफर साढ़े तीन या चार घंटे में पूरा हो जाता है । हालाँकि इसे चार लेन में परिवर्तित किया जा रहा है। हाँलाकि खानापाड़ा से ही मेघालय की सीमा आरम्भ हो जाती है, फिर भी जोराबाट से प्रमुख रूप से सीमा एवं पहाड़ी मार्ग आरम्भ हो जाता है। पहले बर्नीहाट फिर नोंगपो पड़ता है जो कि इस मार्ग का मध्य बिंदु है । नोंगपो में चाय-नाश्ता या आहार ग्रहण करने हेतु सभी पर्यटक या आवागमन करने वाले थोड़ी देर के लिए ठहरते है। टेढ़े-मेढे पहाड़ी रास्तों के बाद उमसिंग नामक स्थान और ढाई से तीन की दूरी पर बरापानी आता है जहाँ से स्थानीय हवाई अड्डा उमराई की ओर चला जाता है । यहाँ से 30 मिनट के बाद आप शिलांग के केन्द्र पुलिस बाजार में पहुँते हैं ।

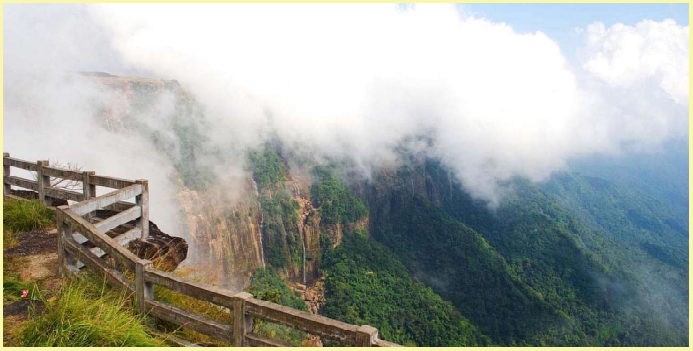
मेघालय एक पहाड़ी राज्य है । जिसके तीन ओर असम व दक्षिण में बंगलादेश है। यह तीन अलग-अलग क्षेत्रों खासी, गारों और जयन्तियाँ पहाड़ियों से मिल कर बना है । राज्य के दक्षिण पूर्व का वह भाग जो आसाम के कछार क्षेत्र से लगा है जन्तिया हिल्स कहलाता है। एक राज्य होने के बाबजूद इन क्षेत्रों की लोक परम्पराएँ, भाषा व मान्यताएँ भी भिन्न हैं । राज्य कि 84% आबादी जनजातीय है, तथा अधिकतर ईसाई धर्मालंबी है, किन्तु इसके बाबजूद इसके इनके समाजों की अपनी मूल परम्पराएँ आज भी बरकरार हैं ।

इस क्षेत्र पर आधिपत्य करने के बाद अंग्रेजों ने चेरापूंजी को जिला मुख्यालय बनाया था, किन्तु अधिक वर्षा होने



के कारण वे इसे 75 कि. मी. दूर शिलांग ले आये जो उनके लिए स्काटलैंड की बनावट जैसा था । बाद में शिलांग को वृहत्त असम की राजधानी बना दिया गया। आजाद भारत में असम में यह एक स्वाभाविक क्षेत्र बना दिया गया, किन्तु लगातार मांग के बाद 1972 में जब मेघालय राज्य बना तो शिलांग उसकी राजधानी बन गया ।

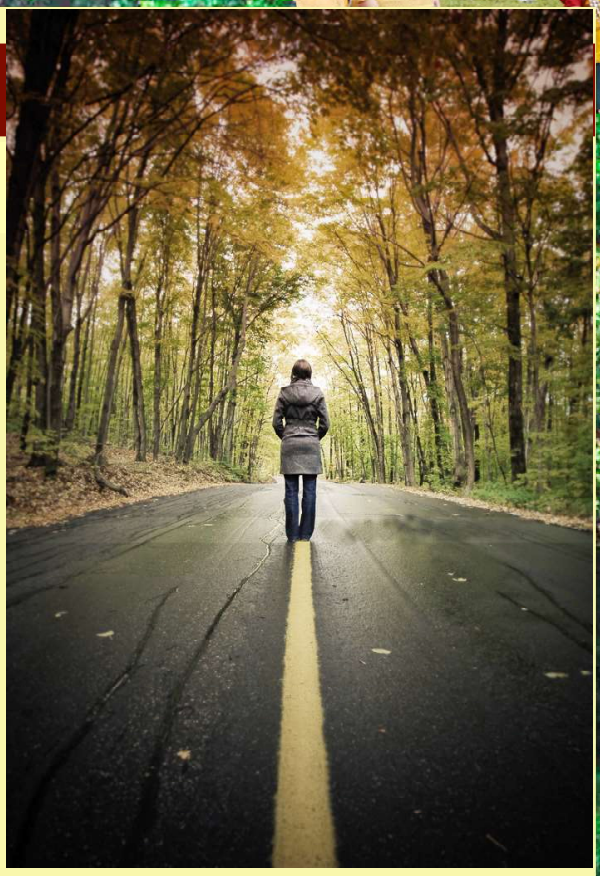
शिलांग खासी पहाड़ियों का दिल है। समुद्र तल से 1200 से 1900 मीटर के मध्य बसा शिलांग उनके लिए आदर्श है जो कुछ दिन सुकून के साथ बिताना चाहते हैं । स्वच्छ वातावरण, मनोरम नजारे, ठंडी जलवायु और शांत माहौल आस-पास अनेक दर्शनीय स्थलों की उपलब्धता हैं । जहाँ अन्य हिल स्टेशनों में वाहन योग्य मार्गों का अभाव है वहीं इस नगर में हर ओर जाने के लिए अच्छी सड़के हैं । इसलिए इसका चारों ओर अच्छा विस्तार हुआ है । राज्य की राजधानी होने के कारण यहाँ पर हर आधुनिक सुविधा उपलब्ध है। हर हिल स्टेशन की पहचान उसके चुनिंदा पर्यटन आकर्षणों से होती है। शिलांग में भी कुछ पार्क हैं, तो संग्रहालय भी हैं। जबकि आस-पास के स्थलों में चेरापूंजी सबसे प्रमुख है। जिसकी सैर के बाद ही शिलांग की यात्रा पूर्ण समझी जाती है । लगभग पाँच लाख की आबादी वाले शिलांग को एक नजर देखना हो तो शिलांग पीक से बेहतर कोई विकल्प नहीं है । यह नगर के सिटी सेंटर यानी पुलिस बाजार से 10 कि. मी. की दूरी पर स्थित है । समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 1900 मीटर है । नगर की अपेक्षा यहाँ पर ठंडक का अहसास होता है । यदि मौसम साफ हो तो दूर भूटान और असम की वर्फीली चोटियाँ देखी जा सकती हैं। शिलांग नगर में दो अच्छे पिकनिक स्थल लेडी हेडरी पार्क व वाडर्स लेक है, जिनमें दो बड़ी छोटी झीले हैं । लेडी हेडरी पार्क के तहत एक छोटी सी चिड़ियाघर भी है । दूसरी झील वाडर्स लेक है जो राजभवन के नजदीक है। नगर के एक छोर पर गोल्फ का मैदान है जो कि एक प्राकृतिक मैदान है। चारों ओर फैली हरयाली इसे चार चाँद लगाती है । यहाँ तीन संग्राहलय हैं, इनमे से एक तितलियों का संग्रहालय है तो दूसरा राज्य संग्राहलय है और तीसरा पूर्वोत्तर राज्यों पर आधारित सांस्कृतिक संग्रहालय है। राज्य संग्रहालय में यहाँ के जनजातीय समाज की झलक देखी जा सकती है । उनके परिधान, अस्त्र-शस्त्र, बर्तन, संगीत उपकरण, कला व हस्तशिल्प को लेकर विविधता बनी हैं । नगर के आस-पास बिशर्प, एलिफेंट व हैप्पी फाल्स हैं । किन्तु इनमें एलिफेंट फाल्स सबसे आकर्षक है जहाँ पानी तीन स्तरों से नीचे गिरता हुआ आकर्षक लगता है । नगर का कैथोलिक चर्च "कैथेड्रल ऑफ मेरी" भी दर्शनीय स्थल है । पुलिस बाजार नगर का दिल है । सुबह से शाम तक यहाँ पर रौनक बनी रहती है । समीप पर ही अंतर्राज्यीय बस अड्डा एवं टैक्सी स्टैंड है । सायं काल में बिजली की रौशनी में पुलिस बाजार बेहद आकर्षक लगता है । शिलांग का एक और आकर्षण क्षेत्र बरापानी झील है, जिसका स्थानीय नाम उमियाम है । लगभग 10 वर्ग कि. मी. क्षेत्रफल में फैली यह कृत्रिम झील दक्षिण खासी की पहाड़ियों से आने वाली उमियाम नदी के पानी को रोककर बनी है । जिसके एक छोर पर बिजली घर है जो शिलांग को बिजली आपूर्ति कराता है । यह झील गुवाहाटी से आते समय मुख्य मार्ग पर शिलांग शहर से 16 कि. मी. पहले मिलती है । यहाँ पर एक पार्क में बड़ी संख्या में पर्यटकों का जमावड़ा लगा रहता है । इस झील की सैर का अपना ही अलग रोमांच है। इसमें जाने के लिए मोटर नौकाएं चलती रहती है । जल क्रीड़ा के अनेक साधन यहाँ मौजूद हैं । झील के किनारे कुछ रिसोर्ट भी बने है । चारों ओर फैली हरियाली किसी को भी अभिभूत या मोहित कर देती है।



खास बातें : - शिलांग आने के लिए सबसे उपर्युक्त समय अक्टूबर से मई है किन्तु वर्षा काल के दौरान भी बहुत से पर्यटक यहाँ आते हैं । इस समय यहाँ के प्रसिद्ध प्रपातों, झरनों की रौनक देखने लायक होती है । शिलांग की भाषा मुख्य रूप से खासी, गारो, जयन्तियाँ और अंग्रेजी है । हाँलाकि यहाँ कि राजभाषा अंग्रेजी ही है तथा यहाँ के लोग हिन्दी लिखना तो ठीक से नहीं जानते, परन्तु कुछ लोग हिंदी बोलना जरुर जानते है । हाँलाकि स्थानों के नाम खासी और अंग्रेजी भाषा में होने से उनकों याद रखना में कठिनाई नहीं होती । पूर्वोत्तर राज्यों के प्रति शेष भारत के लोगों में यह भ्रान्ति है कि यह बेहद अशांत इलाका है और यहाँ बहुत खतरा है, लेकिन यहाँ पर पश्चिम बंगाल सहित पूर्वोत्तर के पर्यटकों की बड़ी संख्या इस मिथक को तोड़ती है । अब अन्य स्थानों के लोग भी यहाँ सैर करने आने लगे हैं ।

जर्नी ऑफ लाइफ

सुश्री मौसमी बैद्य
लेखापरीक्षक



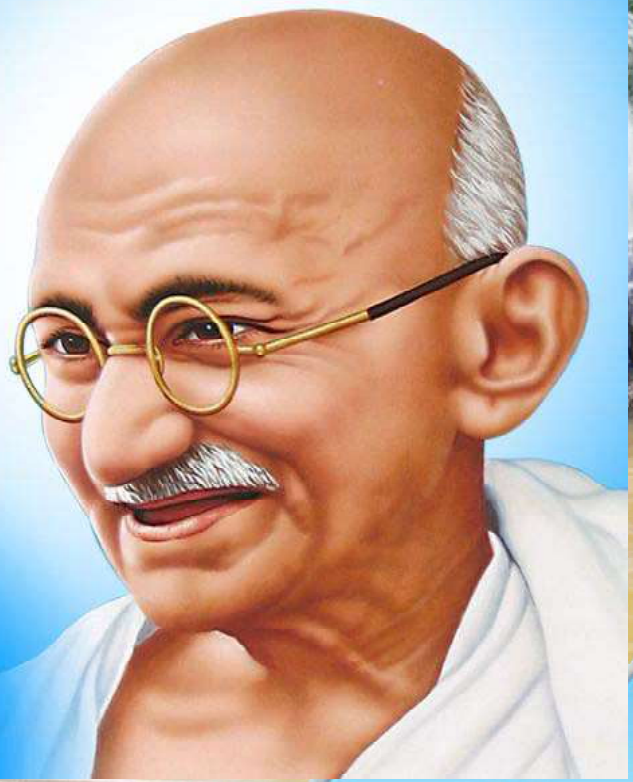
पूछा जो मैंने एक दिन खुदा से,
अंदर मेरे ये कैसे शोर है,
हंसा मुझ पर फिर बोला,
चाहते तेरी कुछ और थी,
पर तेरा रास्ता कुछ और है,
रूह को संभालना था तुझे,
पर सूरत सँवारने पर तेरा जोर है,
खुला आसमान, चाँद, तारे चाहत है तेरी,
पर बन्द दीवारों को सजाने पर तेरा जोर है,
सपने देखता है खुली फिजाओं के,
पर बड़े शहरों में बसने की कोशिश पुरजोर है .....

महात्मा गांधी के बारे में कुछ रोचक तथ्य



श्री विजय छेत्री,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

1. महात्मा गांधी जन्म से बहादुर और बोल्ड नेता नहीं थे। वह बचपन मे स्कूल से भाग जाते थे ताकि किसी से बात न करनी पड़े ।
2. महात्मा गांधी को महात्मा की उपाधि रवीन्द्र नाथ टैगोर ने दी थी और रवीन्द्र नाथ को गुरुदेव की उपाधि गांधी जी ने दी थी ।
3. सन् 1930 में उन्हें अमेरिका की टाइम्स मैगजीन मे "मैन ऑफ दी इयर" का पुरस्कार दिया था ।
4. महात्मा गांधी अपने जीवन में कभी अमरीका नहीं गए और ना हि कभी हवाई जहाज मे बैठे ।
5. महात्मा गांधी को "राष्ट्रपिता" की उपाधि सुभाष चन्द्र बोस ने दी थी।
6. महात्मा गांधी के जन्म दिन 2 अक्टूबर की संयुक्त राष्ट्र ने विश्व अहिंसा दिवस घोषित किया है ।
7. गांधी जी की मृत्यु सन् 1948, 30 जनवरी को हुई थी । उन्हें नाथूराम गोडसे ने गोली मारी थी ।

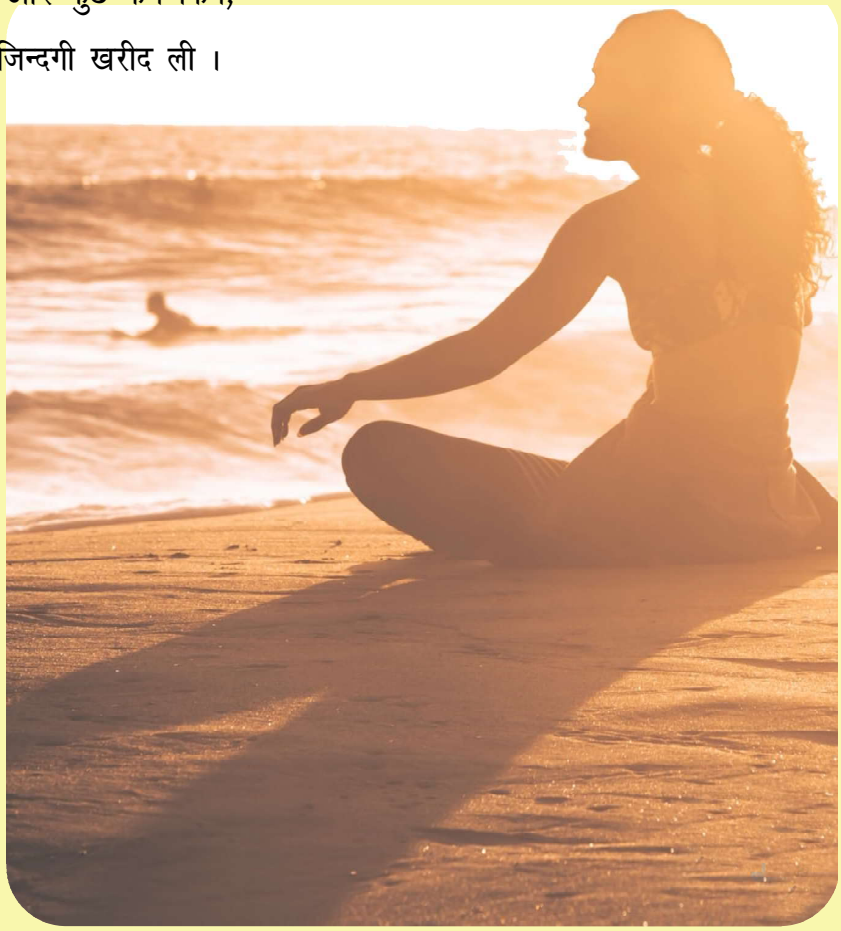




सुकून-ए-जिंदगी

श्रीमती निवेदिता सुक्लाबैद्य
माँ - श्रीमती मौसमी बैद्य
लेखापरीक्षक

रुई का गद्दा बेच कर.... मैंने इक दरी खरीद ली,
ख्वाहिशों को कुछ कम किया मैंने और खुशी खरीद ली.....
सबने खरीदा सोना..... मैंने इक सुई खरीद ली,
सपनों को बुनने जितनी डोरी खरीद ली.....
मेरी एक ख्वाहिश मुझसे मेरे दोस्त ने खरीद ली,
फिर उसकी हंसी से मैंने अपनी कुछ और खुशी और खुशी खरीद ली.....
इस जमाने से सौदा कर..... एक जिंदगी खरीद ली,
दिनों को बेचा और शामे खरीद ली.....
शौक-ए-जिन्दगी कमतर से और कुछ कम किये,
फिर सस्ते में ही सुकून-ए-जिन्दगी खरीद ली ।



साहित्य के समाजशास्त्र की जरूरत



श्री सोनु कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक

साहित्य के समाजशास्त्र की जरूरत के विषय में बात किए जाने से पहले यह समझना आवश्यक हो जाता है कि साहित्य, समाज एवं समाजशास्त्र इन तीनों शब्दों के अर्थ एवं परिभाषा अपने आप में भिन्न है ।

सबसे पहले यदि 'साहित्य' शब्द को परिभाषित किया जाए तो अलग-अलग विद्वानों ने अपने-अपने मत दिए है । आचार्य शुक्ल ने लिखा है - "साहित्य जनता की चितवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है ।" तो महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि "ज्ञानराशि के संचित कोश का नाम साहित्य है ।" बालकृष्ण भट्ट ने 'हिंदी प्रदीप' पत्रिका में 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' शीर्षक से एक लेख ही लिखा था ।

'समाज' शब्द को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि मनुष्यों के आपसी व्यवहार एवं संबंधों से समाज का निर्माण हुआ है । अतः मैकाइवर एवं पेज नामक विद्वानों ने सामजिक संबंधों के जाल को समाज की संज्ञा दी है ।

'समाजशास्त्र' का शाब्दिक अर्थ है - समाज का विज्ञान या समाज का अध्ययन । समाजशास्त्र शब्द लैटिन के वैबपने (समाज) और ग्रीक के स्वहवे (विज्ञान या अध्ययन) से बना है। समाजशास्त्र आधुनिक पश्चिमी चिंतन की देन है और साहित्य का समाजशास्त्र तो और भी परवर्ती साहित्य विधा है ।



साहित्य के समाजशास्त्रीय दृष्टि से किए जाने वाले अध्ययन एवं मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य एवं जरूरत समाज से साहित्य के संबंध की खोज और उसकी व्याख्या से है ।

पिछले कुछ दशकों में साहित्य के समाजशास्त्र की जरूरत को ध्यान में रखते हुए साहित्य की समाजिकता की दिशा में महत्वपूर्ण विकास एवं गंभीर विचार हो रहे है । किसी भी विकासशील जीवन्त समाज के लिए साहित्य और समाजशास्त्र का अध्ययन अनिवार्य होता है । मनुष्य एक सामजिक प्राणी है । आदिम युग से ही मनुष्य और समाज का अटूट संबंध रहा है । साहित्य जब लिखित रूप में उपलब्ध नहीं था उस समय से ही वह जनश्रुति एवं मौखिक स्वरूप में ही समाज की विभिन्न गतिविधियों, स्थितयों, क्रिया-कलापों आदि को अपने में समेटे हुए थोडें-बहुत अभिव्यक्ति के साथ लगातार प्रगति करता आया है । फिर



साहित्यिक रचनाओं के साथ कालांतर में समाजशास्त्र भी विकसित हुआ । वर्तमान में देखे तो साहित्य का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत एवं व्यापक है । इसके अंतर्गत अलग-अलग साहित्यिक विधाएं भी है जिनके भिन्न-भिन्न विषय, दृष्टिकोण, परिवेश, वातावरण, एवं संदर्भ है । इन विधाओं के अंतर्गत निरंतर रचनाएं हो रहे है। जिनका विश्लेषण एवं मूल्याकंन समाज से कट कर किया जाना व्यर्थ साबित होता है ।

प्रत्येक रचनाकार अपने काल से संबध्द होता है उनकी रचनाएं उनके समय के राजनैतिक, सामजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक परिवेश का जीता-जागता दस्तावेज होता है । अतः किसी भी साहित्यकार के साहित्यिक रचनाओं से उनके समय की परिस्थिति, समकालीन समस्याओं का पता चलता है । अतः ऐसे में साहित्यिक सामजिक स्थितियों का ठीक-ठाक मूल्यांकन करने के लिए समाजशास्त्रीय अध्ययन-विश्लेषण की आवश्यकता अनिवार्य हो जाती है ।

समाजशास्त्र सामजिक अन्तः क्रियाओँ और सामजिक संबंधो का अध्ययन-विश्लेषण, मनुष्य के सामजिक गतिविधियों, विविध संगठनों, समुदायों, संस्थाओं, क्रिया-कलापों, प्रक्रियाओँ, संदर्भों, संघर्षों, परिवर्तनों एवं समस्याओं और समाधानों का विवेचन करता है । डॅ. मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं - "साहित्य के समाजशास्त्रीय चिंतन का आरंभ समाज से साहित्य के संबंध की खोज के साथ हुआ था" । इस चिंतन के विकास में अग्रगामी भूमिका निभाने वाली मादान स्तेल ने साहित्य की उत्पत्ति में समाज की भूमिका और समाज पर साहित्य के प्रभाव का विवेचन किया है। इन्होंनें साहित्य के जातीय स्वरूप और समकालीन राजनीति से उसके गहरे संबंध को विशेष महत्व दिया था । मादाम स्तेल के इस चिंतन को अधिक व्यस्थित रूप तेन ने भी साहित्य की सामजिक भूमिका और उनके जातीय चरित्र पर बल देते हुए उसे समाज के बारे में ज्ञान का प्रमुख स्त्रोत माना । ऐसे में यदि कहा जाए कि युगीन परिस्थितयों के मांग के अनुसार किसी तरह के साहित्य रचे गए है, और वर्तमान में रचे जा रहे है । उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक पृष्ठभूमि एवं तत्कालीन परिवेश का सही-सही जायजा लेना हो तो साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन अनिवार्य हो जाता है तो यहा कहना गलत नहीं होगा । इस संदर्भ में रिचर्ड होगार्ट की भी राय है कि - "साहित्यिक साक्ष्य के बिना समाज का अध्ययन करने वाला कोई भी व्यक्ति सामाजिक जीवन की पूर्णतः से अनभिज्ञ भी रहेगा ।"

समाजशास्त्री जान हाल ने साहित्य की मार्क्सवादी व्याख्या का खण्डन करते हुए साहित्य के समाजशास्त्र का महत्व एवं जरूरतों को बेहतर ढंग से स्थापित किया है, लेकिन उन्होंने भी साहित्यिक कृतियों को सामजिक संकेत माना है । उनके अनुसार साहित्य के अध्ययन से समाजशास्त्र को चार तरह के लाभ हो सकते है । एक तो साहित्य समाजशास्त्री को समाज और उसके प्रति व्यक्तियों की प्रतिक्रियाओँ के बारे में अधिक संवेदनशील बना सकता है । दूसरे कल्पना की क्रियाशीलता पर ध्यान





देने से व्यक्तियों के जीवन की वास्तविक अनुभूतियों का बोध हो सकता है । तीसरे साहित्यिक साक्ष्य का ठीक से उपयोग करने पर समाज के बारे में ऐसी जानकारी मिल सकती है जो किसी और स्त्रोत से नहीं मिलती । चौथा लाभ उन्होंने यह बताया है कि साहित्य से प्राप्त साक्ष्य में वर्णन की अनन्य पूर्णता होती है ।

समाजशास्त्री साहित्य को सामजिक तथ्य मानते है साहित्य को समझने के लिए साहित्यिक तथ्य की विशिष्ट स्थिति को समझना आवश्यक हो जाता है । साहित्य के सामजिक आस्तित्व साहित्यकार, पुस्तक एवं पाठक से है । अतः साहित्य के समाजशास्त्री अध्ययन से लेखक या साहित्यकार के उसके सामजिक संबंध, सामजिक स्थिति, जीविका, जीवन शैली एवं साहित्य रचना के लिए प्रेरित होने और तत्कालीन विचारधारा से प्रभावित होने वाले कारणों का पता चलता है जिससे साहित्यकारका वैचारिक मूल्यांकन भी किया जा सकता है । जब कोई रचना प्रकाशित होती है तो पाठकों द्वारा उसकी मांग, रचना के प्रति रूचि-अरूचि के कारणों का एवं पाठक से साहित्य के संबंध का पता भी साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन के जरिए लगाया जा सकता है । कोई भी रचना पाठक तक पहुँचकर ही सार्थक होती है ।

समाजशास्त्रीय अध्ययन में पध्दति का प्रयोग, तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण, सिध्दांत-निर्माण एवं परीक्षण, कार्य-कारणसंबंधो का विवेचन होता है । वहाँ क्षेत्र कार्य की अधिक गुंजाइश होती है । साहित्य के समाजशास्त्र का स्तरीय अध्ययन करने के लिए टेबल वर्क के साथ फील्ड वर्क की भी आवश्यकता होती है । सामजिक समस्याओं जैसे कि बेरोजगारी, गरीबी, अपराध, मानसिक-शारीरिक रोग, परिवार-विभाजन आदि का अध यन करते समय सामाजिक समस्या की प्रकृति, प्रकार, कारण एवं समाधान के बारे में जांच-पड़ताल करना होता है ।

सामाजिक वास्तविक जीवन, अनुभव, विचारधारा और अभिव्यक्ति की कलात्मक क्षमता की साहित्यिक सृजन पर सीधा प्रभाव पड़ता है । लेखक की ऐतिहासिक दृष्टि, गलत विचारधारा से दूरी, तटस्थता, एवं ईमानदारी, सत्य में निष्ठा एवं विश्वास से जो साहित्य निर्मित होगा, वह यथार्थ के बहुत करीब होता है और अपनी अलग पहचान और प्रतिष्ठा रखता है । उदाहरण स्वरूप प्रेमचंद का गोदान और फणीश्वरनाथ रेणु का मैला आंचल उपन्यास के समाजशास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन-विश्लेषण से तत्कालीन सामाजिक स्थिति, ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के किसानों-मजूदरों की वास्तविक स्थिति के कारणों का पता चलता है ।

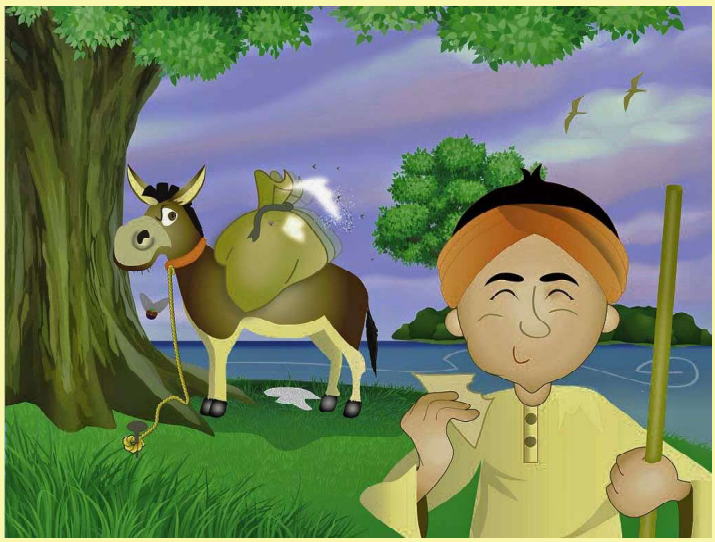
साहित्य का समाजशास्त्र अपने आप में पूर्ण एवं स्वतंत्र साहित्य विधा है । प्रत्येक साहित्यकार अपने समाज से जुड़ा होता है । उनकी रचनाओं में समाजिक गतिविधियों का समावेश अवश्य ही मौजूद होता है एवं साहित्यकार समय-समय पर समाज के शासन व्यवस्था, राजनैतिक, ऐतिहासिक आदि मामलों में जरूर हस्तक्षेप करता है और समसामयिक मुद्दों पर अपनी लेखनी चलाता है । अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि साहित्यकार समाज से तटस्थता का कितना भी दावा क्यों न करें, सामाजिक जीवन से प्राप्त अभिव्यक्ति तत्कालीन परिवेश का प्रभाव उनकी रचनाओं में अवश्य ही मौजूद होता है। यदि साहित्यिक रचनाओं में तत्कालीन सामजिक, राजनैतिक जीवन, वास्तविक घटनाओं, परिस्थितियों, संघर्षों आदि तथ्यों का समावेश मौजूद होता हैतो ऐसे में साहित्य के समाज शास्त्रीय अध्ययन की जरूरत अनिवार्य है ।

गधे की चतुराई

श्री अंटोन मरबनियांग
भाई - श्री केरिओनाल्ड पिंगरूप,
लेखापरीक्षक

बहुत समय पहले की बात है एक गांव में एक धोबी अपने गधे के साथ रहता था । वह लोगों के घर जाकर उनके, कपड़े अपने गधे पर लाद कर लाता था और उन्हें घाट पर ले जाकर कपड़े धोता था ।

इस तरह समय बीतता गया और गधा धीरे-धीरे बूढ़ा हो गया । अब गधे में पहले की तरह ताकत नहीं रही । वह पहले की तरह ज्यादा वजन उठाने के लायक नहीं रहा । एक दिन की बात है धोबी लोगो के घर पर जाकर कपड़े गधे पर लादकर घाट की तरफ जा रहा था । उस दिन बहुत ही गर्मी थी जिसके कारण कमजोर गधा और ज्यादा थक गया था । घाट की तरफ जाते समय रास्ते में गधा एक खड्डे में लड़खड़ा कर गिर गया । धोबी ने अपने गधे को खड्डे में से निकालने के लिये बहुत कोशिश की लेकिन वह उसमे सफल नहीं हुआ ।



गांव के कुछ लोगों ने भी आकार गधे को खड्डे में फंसा देखा तो उसको बाहर निकालने के लिये मदद की लेकिन वह सब भी गधे को निकाल न सके । इसके बाद गाव वालों ने धोबी को सलाह दी की हम तो इस गधे को खड्डे से निकाल नहीं सकते इसलिए ऐसा करते है मिट्टी डालकर इस गधे को इसी में दफन कर देते है । इसी में हमारी और गधे की भलाई है । धोबी पहले तो मानने के लिये तैयार नहीं हुआ ।

लेकिन उसके पास गाव वालों की सलाह मानने के अलावा और कोई उपाय भी नहीं था। वह अपनी जिन्दगी भर पाले हुए गधे को नहीं मारना चाहता था । लेकिन गाव वालों के कहने पर उसे ऐसा करना पड़ा । इसके बाद सभी उस खड्डे में मिट्टी डालने लगे । गधा पहले तो डर गया कि गाव वाले क्या कर रहे है । इस तरह तो वह खड्डे में ही दफन हो जायेगा । लेकिन उसने हिम्मत नहीं हरी । तभी उसको एक तरकीब सूझी । जब गाव वाले गधे के ऊपर मिट्टी डालते तो वह उस मिट्टी को झटक कर नीचे गिरा देता था । फिर उस मिट्टी पर खड़ा हो जाता था । गाव वाले भी गधे की इस हरकत को देखकर हैरान थे । गाव वाले उस खड्डे में मिट्टी डालते गए । कुछ समय के बाद उस खड्डे में मिट्टी भरकर गधा ऊपर आ चूका था । वह कूदकर उस खड्डे से बाहर आ गया यह देख कर धोबी और गाव वाले बहुत खुश हुए और सभी ने गधे की चतुराई की तारीफ की ।

सीख : इस कहानी से हमे यह शिक्षा मिलती है कि हमे कभी भी मुश्किल परिस्थिति में घबराना नहीं चाहिए और चतुराई से काम लेना चाहिए । जिस तरह गधे ने चतुराई से काम लेकर अपनी जान बचाई ।

माँ की ममता



सुश्री बन्दरिशा पिंगरूप
बहन - श्री केरिओनाल्ड
पिंगरूप, लेखापरीक्षक

आम के पेड़ पर एक सुरीली नाम का एक चिड़िया रहती थी। उसने खूब सुंदर घोसला बनाया हुआ था। जिसमे उसके छोटे - छोटे बच्चे साथ में रहते थे। वह बच्चे अभी उड़ना नहीं जानते थे, इसलिए सुरीली उन सभी को खाना ला कर खलती थी।

एक दिन जब बरसात तेज हो रही थी। तभी सुरीली के बच्चों को जोर से भूख लाग्ने लगी। बच्चे खूब जोर से रोने लगे, इतना जोर की देखते-देखते सभी बच्चे रो रहे थे। सुरीली से अपने बच्चों के रोना अच्छा नहीं लग रहा था। वह उन्हे चुप करा रही थी, किन्तु बच्चे भूख से तड़प रहे थे इसलिए वह चुप नहीं हो रहे थे।

सुरीली सोच में पड़ गई, इतनी तेज बारिश में खाना कहा से लाऊँगी। मगर खाना नहीं लाया तो बच्चों का भूख कैसे शांत होगा। काफी देर सोचने के बाद सुरीली ने एक लंबी उड़ान भरी और पंडित जी के घर पाहुच गई।

पंडित जी ने प्रसाद में मिले चावल दाल और फलों को आंगन में रखा हुआ था। चिड़िया ने देखा और बच्चों के लिए अपने मुह में देर सारा चाक्ल रख लिया। और झटपट वहाँ से उड़ गई।

घोसले में पहुचकर चिड़िया ने सभी बच्चों को चावल का दाना खिलाया। बच्चों का पेट भर गया, वह सब चुप हो गए और आपस में खेलने लगे।

सीख : संसार में माँ की ममता का कोई जोड़ नहीं है अपनी जान विपत्ति में डालकर भी अपने बच्चों के हित में कार्य करती है।



काजीरंगा नेशनल पार्क



श्रीमती रोज बेगम,
माँ - मुहम्मद जियाऊल हक,
वरिष्ठ अनुवादक

प्राकृतिक नजारों से सराबोर असम की वादियाँ अन्य स्थानों की तुलना में बेहद रोमांचकारी हैं । दरअसल ब्रह्मपुत्र नदी असम की मुख्य पहँचान है । पहाड़, जंगल और बायलॅजिकेल विविधताओं वाला यह राज्य सैलानियों के लिए हमेशा से आकर्षण का केन्द्र बना रहा है । प्राकृतिक छटा और उससे जुड़ी दंतकथाओं ने असम को सबसे ज्यादा प्रसिद्धि दी है । यह प्रदेश प्रकृति की खूबसूरती के साथ-साथ कुछ ऐसे जीवों का आशियाना भी है जो अब प्रायः लुप्त होने के कगार पर है । एक सींग वाले गैंडे, हुलक, गिब्बन, हाथी, बाघ, स्लहथ बीयर और न जाने कितनी तरह के जीव-जंतु तथा कलरव करते पक्षी यहाँ के इन वनों में विचरण करते हैं ।

काजीरंगा असम का सबसे पुराना नेशनल पार्क है । 440 वर्ग किलोमीटर में फैला यह पार्क एक सींग वाले गैंडे के लिए प्रसिद्ध है । यहाँ हाथी पर बैठकर पार्क की सैर और जंगली जानवरों को एकदम पास से देखने का रोमांच ही कुछ और है। यह गुवाहाटी शहर से 217 किलोमीटर दूर है । यहाँ का निकटतम एयरपोर्ट जोरहाट है, जबकि निकटतम रेलवे स्टेशन दीमापुर है। गुवाहाटी से यहाँ के लिए लग्जरी बस आदि सेवाएँ उपलब्ध है। मध्य असम में बसा काजीरंगा नेशनल पार्क पूर्वी भारत के अंतिम छोर का ऐसा पार्क है जहाँ इंसान नहीं रहते। काजीरंगा का प्राकृतिक परिवेश हरे-भरे जंगलों से भरा हुआ है । साथ ही, यह क्षेत्र बड़ी-बड़ी एलिफेंट ग्रास, दलदली स्थान और उथले तालाब से भरा है । इसलिए यह कई अन्य स्तनपाई जीवों - गैंडा, बाघ, हाथी, चीते, भालू, लंगूर, जंगली बिल्ली, भेड़िया और अजगर के अलावा सैकड़ों चिड़ियों के आवास भी हैं । यहाँ आमतौर पर पेलिकन, बतख, कलहंस, आइबिस, जलका, बगुला, लेसर एडजुलेंट और ईगल बड़ी संख्या में आसानी से देखे जा सकते हैं ।

वर्ल्ड हेरिटेज साइट : -

काजीरंगा को 1908 में रिजर्व फॅरेस्ट और 1950 में वाइल्ड लाइफ सेंचुरी घोषित किया गया। 1985 में 'यूनेस्को' ने इसे वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित किया । ब्रह्मपुत्र नदी के पश्चिमी किनारे पर मिकीर पर्वत की तहलटी पर बसा यह पार्क ब्रह्मपुत्र के बाढ़ के समतली क्षेत्र में बसा हुआ है। यहाँ का जीवन लंबे और घने घास के मैदान के साथ खुले जंगलों, परस्पर जुड़े प्रवाह और ढेरों छोटी झीलों के अनुकूल है । इस पार्क का तीन चौथाई से ज्यादा भाग हर साल ब्रह्मपुत्र की बाढ़ में डूब जाता है । ब्रह्मपुत्र नदी मिट्टी बहाकर यहाँ लाती है । काजीरंगा में तीन मुख्य





वनस्पतियाँ पाई जाती हैं - जलप्लावित घास का मैदान, ऊष्णकटिबंधीय सदाबहार वन और ऊष्णकटिबंधीय अर्ध-सदाबहार वन। इसके पश्चिमी क्षेत्र में घास का मैदान है, जहाँ ऊँचाई पर लंबी-लंबी 'एलिफेंट' घास लगी है, तो निचले हिस्से यानी भील्स (झील) के आसपास छोटी घास लगी हैं।

सदाबहार वन : -

ये हर साल आने वाली बाढ़ के कारण कायम रहती है। ऊश्णकटिबंधीय दलदली सदाबहार वन कंचाझुरी, पनवारी आदि के पास स्थित है, जो वृक्षों से ढका रहता है। ऊश्णकटिबंधीय अर्ध सदाबहार वन बागुरी, बिमाली और हल्दीबारी के पास स्थित हैं।

पार्क में भारत की संकटग्रस्त प्रजाति के 15 स्तनपायी पाये जाते हैं। काजीरंगा पार्क दुनियाभर में सबसे ज्यादा संख्या में भारतीय गैंडों और भारतीय हाथी का आवास है। इनके अलावा कई तरह के जीव-जंतु यहाँ पाये जाते हैं। यहाँ रहने वाले हाथी और अन्य जानवर मानसून के आगमन पर नेशनल पार्क में हर साल आने वाली बाढ़ से बचने के लिए दक्षिण की ओर मिकीर हिल्स या उससे आगे की ओर प्रवास कर जाते हैं। यहाँ बने विभिन्न जलाशयों में मछली और प्रवासी पक्षियों का समृद्ध खजाना भी है। यहाँ प्रवासी पक्षियों की सौ से भी ज्यादा प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जो सर्दियों में सुदूर साइबेरिया से यहाँ आती हैं।

ग्रेपेल्कन का ब्रीडिंग ग्राउंड : -

इसके अलावा, काजीरंगा गाँव के पास ग्रेपेल्कन का ब्रीडिंग ग्राउंड है। यहाँ आने वाले अन्य पक्षियों में ब्लैकनेक्ड स्टॅर्क, पल्लास फिश, ईगल, ग्रेहेड फिश ईगल, बंगाल फ्लोरिकन, स्वाम्प पार्टरिज, ग्रेपीकॅक-फिसंट, ग्रेट पेड हॅर्नबिल, ग्रीन इम्पीरियल पिजन, सिल्वर ब्रेस्टेड ब्रोडबिल के अलावा एविफाउना की लगभग तीन सौ प्रजातियाँ पाई जाती हैं। काजीरंगा नेशनल पार्क में सरीसृपों में मुख्यतः वाटर मॅनीटर, इंडियन पाइथन, कॅमन कोबरा और किंग कोबरा आसानी से देखे जा सकते हैं।

परिवहन : -

काजीरंगा गुवाहाटी शहर से 217 किलोमीटर पूर्व और जोरहाट से 97 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। यह गुवाहाटी हवाई अड्डे से 239 किलोमीटर दूर है। काजीरंगा जाने के लिए नियमित रूप से राज्या सरकार की बसें, ट्रैवल एजेंसीज के द्वारा चलाई जा रही बसें, टैक्सी आदि भी उपलब्धप हैं। काजीरंगा जाते वक्त मिलने वाले बस पड़ाव को 'कोहोरा' के नाम से जानते हैं। यहाँ से नजदीकी रेल सेवा 75 किलोमीटर दूर है।

शिकारियों का आतंक : -

असम के काजीरंगा नेशनल पार्क में समय-समय पर शिकारियों का आतंक मचा रहता है। मौका मिलते ही शिकारी गैंडे और हाथी को गोली मार कर हत्या कर देते है तथा उसके बहुमूल्य सींग एवं दाँतों को चुरा ले जाते है। पशुओं पर हो रहे निरन्तर हमले के विरोध में स्थानीय लोगों द्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग-37 को भी बंद करने का प्रयास किया जाता है। इसके अलावा प्रदर्शनकारियों द्वारा नेताओं के पुतले भी जलाये जाते है। दूसरी ओर वन अधिकारियों द्वारा शिकारियों को पकड़ने के लिए हाई अलर्ट घोषित करने का दावा किया जाता है।

काजीरंगा नेशनल पार्क में बाढ़ : -

जुलाई, 2012 में काजीरंगा नेशनल पार्क के 70 : (फीसदी) हिस्से में बाढ़ का पानी घुस जाने से 631 जानवरों की मौत हो गई थी। बाढ़ का पानी पार्क में घुसने की वजह से कई जानवर नेशनल हाइवे की तरफ चले जाते हैं। नतीजतन हाइवे पर गाड़ियों की टक्कर से तकरीबन 50 हिरणों एवं अन्य जानवरों की मौत हो जाती है। काजीरंगा नेशनल पार्क में 100 से ज्यादा रायल बंगाल टाइगर मौजूद हैं। इस अवधि के दौरान बाघ भी इधर-उधर भटकने लगते है तथा ऊँचे स्थानों की तलाश या अनजाने में ही लोगों की बस्ती की ओर रूख करने लगते है। बाढ़ की वजह से पार्क प्रशासन को डर लगा रहता है कि शिकारी इसका नाजयज फायदा ना उठा लें। इसी वजह से बाढ़ के दौरान नेशनल डिजास्टर मैनेजमेंट अथहॅरिटी के सदस्यगण असम के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का निरन्तर दौरा करते रहते है। ऐसी दयनीय स्थिति में राज्य सरकार द्वारा भी राहत कार्य जारी रखा जाता है, जिससे मानव और जानवर दोनों ही सुरक्षित एवं एक दूसरे से दूरी बनाए रखने में सक्षम हो सके।

मेहनत का फल



श्री केरिओनाल्ड पिंगरूप
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक गाव मे दो मित्र नकुल और सोहन रहते थे। नकुल बहुत धार्मिक था और भगवान को बहुत मानता था। जबकि सोहन बहुत मेहनती था। एक बार दोनों ने मिलकर एक जमीन खरीदी। जिससे वह बहुत फसल ऊगा कर अपना घर बनाना चाहते थे।

सोहन तो खेत में बहुत मेहनत करता लेकिन नकुल कुछ काम नहीं करता बल्कि मंदिर में जाकर भगवान से अच्छी फसल के लिए प्रार्थना करता था। इसी तरह समय बीतता गया। कुछ समय बाद खेत की फसल पक कर तैयार हो गयी। जिसको दोनों ने बाजार ले जाकर बेच दिया और उनको अच्छा पैसा मिला। घर आकार सोहन ने नकुल को कहा कि इस धन का ज्यादा हिस्सा मुझे मिलेगा क्योंकि मैंने खेत में ज्यादा मेहनत की है।

यह बात सुनकर नकुल बोला "नहीं धन का तुमसे ज्यादा हिस्सा मुझे मिलना चाहिए क्योंकि मैंने भगवान से इसकी प्रार्थना की तभी हमको अच्छी फसल हुई। भगवान के बिना कुछ संभव नहीं है।" जब वह दोनों इस बात को आपस में नहीं सुलझा सके तो धन के बटवारे के लिए दोनों गाव के मुखिया के पास पहुँचे। मुखिया ने दोनों की सारी बात सुनकर उन दोनों को एक-एक बोरा चावल दिया जिसमे कंकड़ मिले हुए थे। मुखिया ने कहा की कल सुबह तक तुम दोनों को इसमे से चावल और कंकड़ अलग करके लाने है तब में निर्णय करूंगा की इस धन का ज्यादा हिस्सा किसको मिलना चाहिए।



दोनों चावल की बोरी लेकर अपने घर चले गए। सोहन ने रात भर जागकर चावल और कंकड़ को अलग किया। लेकिन नकुल चावल की बोरी को लेकर मंदिर में गया और भगवान से चावल मे से कंकड़ अलग करने का प्रार्थना की। अगले दिन सुबह सोहन जीतने चावल और कंकड़ अलग कर सका उसको ले जाकर मुखिया के पास गया। जिसे देखकर मुखिया खुश हुआ। नकुल वैसी की वैसी बोरी को ले जाकर मुखिया के पास गया।

मुखिया ने नकुल को कहा "की दिखाओ तुमने कितने कितने चावल साफ किया है।" नकुल ने कहा कि मुझे भगवान पर पूरा भरोसा है कि सारे चावल साफ हो गए होंगे। जब बोरी को खोला गया तो चावल और कंकड़ वैसे के वैसे ही थे। मुखिया ने नकुल को कहा की भगवान भी तभी सहायता करते है जब तुम मेहनत करते हो। मुखिया ने धन का ज्यादा हिस्सा सोहन को दिया। इसके बाद नकुल भी सोहन की तरह खेत में मेहनत करने लगा और अबकी बार उनकी फसल पहले से अच्छी हुई।

सीख : हमे भगवान पर विश्वास रखकर खुद से मेहनत करना चाहिए।



सुविचार

श्रीमती सुमित्रा छेत्री,
पत्नी - श्री विजय छेत्री,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



1. शेर छलांग मारने के लियर एक कदम पीछे लेता है । इसलिए जब जिंदगी आपको पीछे धकेलती है तो कमर कस ले --- जिंदगी आपको एक ऊची छलांग के लिए तैयार है।
2. सफलता की खुशी माना अच्छा है, उससे अच्छा है अपनी असफलता से सीख लेना।
3. चुनौतियों को स्वीकार करो क्योंकि, इससे या तो सफलता मिलेगी या शिक्षा ।
4. किसी का किया एहसान कभी भूलो मत अपना किया एहसान कभी याद मत करो।
5. चिजों की कीमत मिलने से पहले होती है और इंसानों की कीमत खोने के बाद।
6. यदि आप सत्य बोलते है, तो आपको कुछ याद रखने की जरूरत नहीं।
7. सत्य परेशान हो सकता है, लेकिन पराजित नहीं ।
8. आपका सबसे अच्छा शिक्षक आपकी आखरी गलती है ।

रिश्ता

श्रीमती संदलीन खोंगवीर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हमारा रिश्ता हमेशा खामोश बना हुआ था,
नजरों से बातें करते थे,
होले से मुसकुराया करते थे,
पर एक दिन अचानक,
हमारी चोरी पकड़ी गई,
स्कूल में बात फैल गई,
तब से उसने शर्म के मारे,
देखना छोड़ दिया,
तब से हमे अनदेखा कर रही है,
इशारो की बातें अजनबी सी लग रही है ।





फूलों की शक्ति

श्रीमती लिसामाई सिएम
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

फूल, कुदरत का सबसे खूबसूरत तोहफा । अनगिनत आकार, जीवंत रंग, व्यक्तिगत सुंदरता, नाजुक पंखुड़िया और उनकी मनमोहक महक । फूल हमारी आँखों को, आकर्षित करते है और फिर हमारे जीवन में, एक महान भूमिका निभाते है ।

केवल अपने घरों में फूल लगाकर हम घर की सुंदरता को बढ़ा सकते है, इससे शांति और आनंद की अनुभूति होती है । मनुष्य की गहरी भावनाओं को विभिन्न फूलों के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है । लाल गुलाब से लेकर छोटी डेजी तक, फूलों का साम्राज्य विस्तृत और विविधा है । इन खूबसूरत कृतियों को उनके चिकित्सीय लाभों के लिए भी जाना जाता है, उनकी सुगंध तनाव मुक्त कर सकती है और विश्राम को बढ़ावा दे सकती है । फूलों ने युगों - युगों में अनेक कवियों और कलाकारों को प्रेरणा दी । जैसा कि वे हमारे जीवन में एक महान भूमिका निभाते है, वे परागण के माध्यम से पर्यावरण के लिए भी बहुत महत्व रखते है और पक्षियों और कीड़ों के लिए भोजन और आश्रय प्रदान करते है । फूलों का हमे मुग्ध करने का अपना तरीका होता है ।

इसलिए जब हम किसी मैदान या फूलों के बगीचे में, आते है, तो आइए सुनिश्चित करें कि हम फूलों, के उपहारों की सराहना करने के लिए कुछ समय, निकाले और खुद को प्रकृति से थोड़ा और जोड़ लें ।

ऊर्जा



श्री सुमित कुमार,
भाई - श्री अमित कुमार वर्मन,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बजट 2021 में वित्तमंत्री निर्मलासितारमन स्वच्छ और हरित ऊर्जा के दिशा में बहुत बड़ी घोषणाएँ की है । अक्षय और हरित ऊर्जा पे जोर देते हुए इस बजट में सौर्य ऊर्जा और हाइड्रोजन ऊर्जा पे ध्यान केन्द्रित की गई । गैर परंपरागत ऊर्जा में बढ़ावा देते हुए भारतीय सौर्य ऊर्जा निगम मे 1000 करोड़ और भारतीय नवीकरण ऊर्जा निगम में 1500 करोड़ की निवेश की घोषणा की है । बजट में हाइड्रोजेन ऊर्जा मिशन की घोषणा करके देश को स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में ले जाने में एक बड़ा कदम उठाया है । हाइड्रोजेन ऊर्जा एक स्वच्छ ऊर्जा के रूप में देश के प्रदूषण कम करेगी । देश मे ऊर्जा का प्रबंधन आज ना केवल आर्थिक दृष्टि से अहम है बल्कि जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपपने के लिए कार्बोन उत्सर्जन को कम करने के लिहाज से भी महत्वपूर्ण है । क्योंकि आज भी ज़्यादातर ऊर्जा उत्पादन तापीय संयंत्र से होता है जो पूरी तरह से कोयले के उपयोग पर निर्भर है । ऐसे में हाइड्रोजेन ऊर्जा एक स्वच्छ ऊर्जा के रूप में उम्मीद जगाती है ।

इसके अलावा सोलर सेल और सोलर पैनलों के लिए चरण बद्ध निर्माण योजना को सूचित किया जाएगा साथ ही घरेलू उद्योग निर्माण को बढ़ावा देने के लिए सोलर इनवर्टर पर कस्टम ड्यूटि 5% से बढ़ाकर 30% और सोलर लालटेन पर 5% से 15% तक बढ़ायी गई है। भविष्य जरूरतों को देखते हुए हमे जरूरत है की सौर्य और हाइड्रोजन ऊर्जा में अभी हमे और सोध करने की जरूरत है ताकि ऊर्जा सभी को एक मुनासित और किफायती दरों पर उपलब्ध कर सके जो आने वाली पीढ़ी के लीले भी अच्छा होगा अन्यथा उन्हे ऊर्जा संकटों का सामना करना पड़ेगा जिसका परिणाम गंभीर हो सकता है ।





पूर्वोत्तर की भाषाएँ और हिन्दी



मुहम्मद जियाऊल हक
वरिष्ठ अनुवादक

भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र का वैविधपूर्ण जीवन में एक सतत प्रवाहित सांस्कृतिक धारा सम्पूर्ण क्षेत्र को एक सूत्र में बाँधती है । यहाँ की सांस्कृतिक, भौगोलिक और सामाजिक एवं भाषिक विशेषताएँ अनेकता में एकता के सिद्धान्त को निरूपित करती है । यू तो भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र उत्तंग शिखरों से मंडित, पर्वत श्रृंखलाओं से परिवेष्टित, गहन वनों से परिपूर्ण प्रकृति का सुन्दर क्रीड़ाभूमि है । परन्तु हर एक राज्य की अलग-अलग विशेषताएँ एक अलग पहचान भी दिलाती हैं। इसलिए पूर्वोत्तर के आठों राज्यों का एक सामान्य परिचय सुधी पाठकों के लिए रखना अत्युक्ति नहीं होगी ।

अरूणाचल : प्रातःकालीन सूर्य की स्निग्ध, कोमल और सुरम्य अरूण किरणें जहाँ सबसे पहले पड़ती है, वह अरूणाचल प्रदेश राज्य है । यहाँ का 51,540 वर्ग कि.मी. क्षेत्र वनों से अच्छादित है । कामेंग, सुबनसिरि, सियांग, दिहांग, रिराप आदि मुख्य नदियों की जलधारा पूरे राज्य को नहलाती रहती है ।

मंगोल प्रजाती के अरूणाचल वासियों में तिब्बती संस्कृति का प्रभाव रहा है । जनजातियों में आदी, निशि, आयातानी, खाम्ती, सिंहफो, वांगरा आदि प्रमुख हैं । प्रकृति के उपासक तथा सूर्य और चन्द्र की पूजा-पाठ करनेवाले अरूणाचली जनता शान्तिप्रिय हैं । 1997 की जनगणना के अनुसार प्रदेश की कुल आबादी 1,98,96,643 है और कुल जनजाति उपजातियों की संख्या 5,50,351 है । साक्षरता दर 60% है जबकि मुख्य भाषा बोलियों की संख्या 24 है । इस प्रदेश की बोलियाँध्उप बोलियों में से मुख्यतः मोनपा, मिजि, अँका, शेरबुक, पेन, बगति, निशि, आपातानी, तागीन, हिलमिरि, आदी, गालोंग, मिनयोंग, पदम-हदू, मिस्मि, खाम्ती, नक्ते, टांगखा, बामजी आदि हैं ।



असम : असम पूर्वोत्तर का एक महत्वपूर्ण राज्य है । अंग्रेजों के आगमन से पूर्व लगभग 600 वर्षों तक असम में आहोम शासन रहा था । श्रीमंत शंकरदेव एक महान संत के रूप में इस धरती पर अवतरित हुए थे, जिनका असम के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन पर एक क्रांतिकारी प्रभाव पड़ा। कोच, कछारी, लालुंग, बोड़ो, कार्बी, राभा आदि असंख्य जनजातियों को लेकर एक वृहत्तर असमियाँ जाति यहाँ की प्रमुख निवासी है । बहुरंगी संस्कृति से सराबोर इस प्रदेश की प्रमुख भाषा असमियाँ है, जिसकी उत्पत्ति प्राचीन भारतीय आर्यभाषा से हुई है । साक्षरता का दर 75% है और कुल आबादी 02 (दो) करोड़ से भी ज्यादा है । यहाँ की प्रमुख नृत्य "बिहु" है । इसके अलावा एक सिंग वाला गैण्डा, चाय तथा पाट एवं मूगा के पोषाक के लिए असम पूरे विश्व में प्रचलित है ।

मेघालय : अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के कारण मेघालय को "पूर्वोत्तर का स्कार्टलैण्ड" भी कहा जाता है । यहाँ के घने वन, ऊँचे पर्वत, गुफाएँ और झरझराती झर्नें अनायास ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। राज्य का क्षेत्रफल 22,429 वर्ग कि.मी. है और आबादी 17,74,778 है। साक्षरता दर 77% है । मेघालय की राजभाषा अंग्रेजी है और राज्य में अन्य भाषाओं के अतिरिक्त खासी, जयन्तिया और गारो बोलियाँ बोली जाती हैं । "नङक्रम" नृत्य खासी जनजातियों का एक प्रसिद्ध नृत्य है, जो अनायास ही सभी समूदय के



मन में छा जाता है।

नागालैण्ड : नागालैण्ड अपनी गौरवमय परम्पराओं के साथ भारत के पूर्वोत्तर भाग में विराजमान है । राज्य का क्षेत्रफल 16,527 वर्ग कि.मी. है, जबकि इस प्रदेश में 32 जनजातियाँ रहती हैं । ये जनजातियाँ चाग, आओ, कोनयाक, अंगामी, सेमा, लोथा, रेग्मा, चाखेनांग, फोम आदि बोलियाँ बोलती है। "नागामीज" प्रमुख आदान-प्रदान की भाषा है । राज्य की राजभाषा अंग्रेजी है । पारम्परिक वेश-भूषा में नागा नृत्य उनकी संस्कृति और जातीय अभिरूचि को प्रदर्शित करती है । साक्षरता दर 84% है और आबादी 7,74,930 है ।

मणिपुर : पूर्वोत्तर के दक्षिण भाग में स्थित मणिपुर राज्य की सीमाएँ म्याँमार से लगी है। चिरन्तर परम्परा और प्रचुर अबाधित स्वच्छंद सौन्दर्य से अलंकृत है यह भूमि। मणिपुर में अनेक जनजातियाँ हैं, जैसे - मेइती, मोखोन, ताङखुल, मार्टिन, आइमोल, लाममाङ, मोन्सांग, काबुई आदि। मणिपुरी भाषा एक समृद्ध भाषा है और यहाँ का लोक साहित्य इनके सांस्कृतिक इतिहास का प्रमुख स्रोत है । यहाँ की आबादी 14,20,953 है और साक्षरता का प्रतिशत 76(%) है । 30 से अधिक बोलियाँ है, पर प्रमुख भाषा मणिपुरी और गौणतः बाङला भी बोली जाती है। यहाँ की प्रमुख नृत्य "लाई-हारोवा" है ।

मिजोरम : हरे-भरे पर्वतों का देश मिजोरम अपनी हरियाली के कारण ही खुबसूरत है । 19वीं सदी से ही ईसाई मिशनरियों का प्रभाव यहाँ पड़ने लगा जिसके परिणामतः मिजो के सामाजिक जीवन पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ा। तथापि अपनी संस्कृति के प्रति सजग मिजोरम का साक्षरता दर 95% है । यहाँ की आबादी 4,87,774 है और 10 से भी अधिक बोलियाँ बोली जाती हैं । प्रमुख बोली है - लुशाई, दुलहियाँ, चकमा, कुकी, म्हार, रियांग, लाखेट, पोबी, राल्टे आदि। मिजोरम की राजभाषा अंग्रेजी है और प्रमुख नृत्य "चेराओ" है ।

त्रिपुरा : अति विशिष्ट प्राकृतिक अवस्थित तथा समृद्ध परम्पराओं के कारण ही त्रिपुरा राज्य पूर्वोत्तर में एक आकर्षण का केन्द्र है । पर्वत और घाटियों के आगोश में बसे यहाँ के गाँव जातीय परम्परा के सजीव चित्र हैं । चूँकि यहाँ बाङला भाषा की बहुलता है परन्तु गाँवों और दूरदराज के इलाकों में 20 से भी अधिक जनजातियाँ पाई जाती हैं । ये हैं - त्रिपुरी, रियांग, जमातिया, नोवालिया, दारलंग, हालम, चक्मा, कालाई आदि। यहाँ की आबादी 7,74,930 है और साक्षरता दर 73% है । इस राज्य की राजभाषा "बांगला" है परन्तु "कोकबरोक" को राजभाषा बनाने की संघर्ष भी जारी है । यहाँ के प्रत्येक सम्प्रदाय की अपनी-अपनी संस्कृति है ।

सिक्किम : घने जंगल, ऊँचे-ऊँचे पर्वत एवं शिखरों से घिरा 7076 वर्ग कि.मी. तक फैला छोटा सा सिक्किम राज्य अनायास ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है । कुल आबादी 3,26,385 और साक्षरता का प्रतिशत है 79 (%) । मुख्य भाषा और बोलियों की संख्या है 05 (पाँच)। लेपचा, भुटिया, लिम्बू आदि जनजातियों की बोलियाँ है, पर प्रमुख आदान-प्रदान की भाषा "नेपाली" है। यहाँ की संस्कृति बौद्ध धर्म और हिन्दू धर्म का सम्मिश्रण है । "छाम" नृत्य प्रसिद्ध लोक नृत्य है ।

पूर्वोत्तर की राजभाषाएँ : आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं में से पूर्वोत्तर की असमियाँ, मणिपुरी, बाङला और बोड़ो हैं, जिनका प्रयोग राजभाषा के रूप में विधान मंडलों में किया जाता है । जहाँ तक राजभाषा हिन्दी की बात है, इसका कार्यान्वयन का समग्र दायित्व केन्द्र सरकार पर न्यस्त है, इसलिए यहाँ हमारा संदर्भ राजभाषा हिन्दी से अभिप्रेत है ।



संघर्ष भरा जीवन



श्री अमित कुमार वर्मन,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जब जीवन के संघर्ष से
टूट चुका हो अंतरात्मा
तब मिले सुख के आसमान का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ।

जब रिश्ते में बहुत दरार आ जाए
और आपस में कुछ समझ नहीं आए
फिर उस संबंधों का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ।

सपने बड़े - बड़े देखा करो
पर उसे पाने के पीछा ना करो
फिर उस सपने को देखने का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ।

फसल सुख कर गिर जाए
तिनका-तिनका हो कर बिखर जाए
फिर आने वाली वर्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ।

दूसरे की त्रुटियो से ढूंढने में
खुद ही त्रुटि करने लगा हम
फिर संसार में आने का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ।

बहुत अधिक संसाधनो की छह में
छोटे - छोटे खुशियाँ को अनदेखा करना
तब मिले सुख के समंदर का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ।



बचपन

श्रीमती हिमाशुभ्रा चक्रवर्ती,
पत्नी - श्री अभिनंदन गोस्वामी,
लेखापरीक्षक

वो क्या समय था,
वो क्या दिन था,
सुहाना हमारा बचपन था,
अगर जिंदगी किताब होती,
तो हर पन्नो में लिख जाती,
उस हसीन पल की याद,
फीके पर गये है आज,
वो सब सुहाने पल,
व्यस्त की इस दुनिया में,
खो गया है,
हमारा बचपन,
रह गया है केवल एक,
प्यारा मिठास उस पल की ।



धरती



श्री अभिनंदन गोस्वामी,
लेखापरीक्षक

कितना सुंदर है धरती हमारे,
कही पहाड़ है तो कही नदी की बहारे,
नीला आकाश है आंचल इसका,
रूप इसकी करते है मन को प्यासा,
बारिश की बुँदे, धूप की प्यास,
उस में भी है एक प्यारा सा मिठास,
बिछाई है इसने,
हरियाली की चादर,
जहा रहते है,
हम सब मिलकर,
इतनी प्यारी इस धरती को,
करता हूँ मैं शत शत नमन ।



सफलता का मूल मंत्र



श्रीमती मुमताज बेगम
पत्नी - मुहम्मद जियाऊल हक
वरिष्ठ अनुवादक

अपने जीवन उदेश्य को जानना और उसे प्राप्त करने के लिए दृढ आत्मविशवास रखना, यही सफलता की ओर पहला कदम है । यह अदम्य विचार कि मैं अवश्य सफल होऊंगा और उस पर पूरा विश्वाहस ही सफलता पाने का मूल मंत्र है । याद रखिए ! विचार संसार की सबसे महान शक्ति है यही कारण है कि सफलता (Success) पाने वाले लोग पूर्ण आत्मविश्वास रखते हुए अपने कर्मों को पूरी कुशलता से करते हैं, दुसरो की सफलता (Success) के लिए भी वे सदा प्रयत्नेशील रहते हैं।

प्रत्येक विचार, प्रत्येक कर्म का फल अवश्य मिलता है अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा । यही प्रकृति का नियम है । इसमें देर हो सकती है पर अंधेर नहीं । इसलिए आप सफल होना चाहते हैं तो अच्छे विचार रखिए, सद्कर्म करिए और जरुरतमंदो की निःस्वार्थ भाव से सहायता तथा सेवा करिए । मार्ग मे आने वाली कठिनाइयों, बाधाओं और दुसरो की कटु आलोचनाओं से अपने मन को अशान्त न होने दीजिए।

जब अपनी समस्या न सुलझे

जब कोई अपनी समस्या को हल न कर सकें तो उसके लिए सब से अच्छा तरीका एक घ्से व्यक्ति की खोज करना है जिसके पास उससे भी अधिक समस्याएँ हो, और तब वह उन्हें हल करने मे उस की सहायता करें । आप की समस्या का हल आप को मिल जाएगा । चौकिए मत, इसे आजमाइएं ।

बीज और फल अलग-अलग नहीं

विश्वर प्रसिद्ध विचारक इमर्सन ने ठीक ही कहा है कि - "प्रत्येक कर्म अपने में एक पुरस्कार है । यदि कर्म भली प्रकार से किया गया होगा और शुभ होगा, तो निश्चउय ही उस का फल भी शुभ होगा। इसी प्रकार गलत तरीके से किया गया अशुभ कर्म हानिकारक होगा" । आप इसे पुरातन पंथ नैतिकता कह सकते हैं, जो कि वास्तव में यह है । लेकिन, साथ साथ ही, यह आधुनिक नैतिकता भी है । यह उस समय भी प्रभावशाली था, जब मनुष्य ने पहिए का अविष्कार किया था और भविष्य में भी प्रभावशाली रहेगी, जब मनुष्य दुसरे ग्रहो मे निवास करने लगेगा । यह नैतिकता से अधिक प्रकृति का क्षतिपूर्ति नियम है । जो जैसा करेगा वैसा भरेगा । वैज्ञानिक दृष्टी से कर्म और फल के रुप मे दर्शाया जा सकता है । जैसे बीज बोएंगे वैसे फल पाएगे।

अंधविश्वा स सफलता में सबसे बड़ी बाधक

मनुष्य जीवन भर इस अज्ञानपूर्ण अंधविश्वोस से चिंतित रहते हैं कि कही उसे कोई धोखा न दे जाए । उसे यह ज्ञान नहीं होता कि मनुष्य को स्वयं उस के सिवाए कोई दूसरा धोखा नहीं दे सकता, वास्तव में, वह अपने ही मोह और भय के कारण धोखे मे फंसता है । हम भूल जाते हैं कि एक परमशक्ति भी है जो सदैव हर व्यक्ति के साथ रहती है । जब कोई व्यक्ति किसी से कोई समझोता या अनुबंध करता है, तो यह परमशक्ति अदृश्य और मौनरुप से एक साक्षी की तरह घ्उपस्थित रहती है । हम इस दुनियां को धोखा दे सकते है पर इस अदृश्य शक्ति को नहीं । इसलिए जो व्यक्ति दूसरों को



धोखा देकर या उस का शोषण करके जो व्यक्ति सफलता या धन प्राप्त करना चाहता है उसको अन्त मे भयानक परिणामों का सामना करना पडता है । यही कारण है कि संसार के सभी संतों और महापुरुषो ने निःस्वार्थ कार्य करने पर बल दिया है ।

भय सफलता का दुशमन

सफलता के मार्ग मे पड़ने वाली सबसे बडीघ बाधा हमारा भय ही है, वही हमारा दुशमन है अतः हमें भयभीत नहीं होना चाहिए । इसको दुर करने के लिए सर्वोत्त्म उपाय यह है कि हम जिस वस्तु, आदमी या परिस्थिति से भयभीत होते है, उसी का बुद्धिमानी पूर्ण साहस से सामना करें । भय के कारणों पर विचार कर उन्हें दुर करें और जिस सद्कार्य को करने से भय अनुभव होता हो उसे परमात्मा पर अटूट श्रद्धा और आत्मविश्वास रखते हुए कर डालें । स्मरण रखिए आप का भय कोई दुसरा दुर नहीं कर सकता, वह केवल आप को सलाह दें सकता है, उसे दुर तो आप को ही करना होगा ।

जलन से बचिए

ईष्या या जलन से हमारी मानसिक शान्ति भंग होती है जिस के कारण हम अपने कार्यों को पूरी योग्यता से नहीं कर पाते। इसका परिणाम यह होता है कि कर्म में न सफलता मिलती है और न ही मानसिक आनंद। हमें दुसरों की उन्नति या चमक-दमक को देख कर जलना नहीं चाहिए । ईष्या, द्वेष साधारण भाषा में जलन कहते हैं। सच मे यह जलन हमारी कार्यकुशलता, मानसिक शान्ति और संतुलन को जला डालती है। अतः यदि हम अपने जीवन मे सफलता पाना चाहते हैं, तो जलन से बचना चाहिए ।

वैज्ञानिक-सी सोच

हमारे मस्तिष्क के विचारों में संसार को बदल देने की शक्ति। है । विचारों की शक्ति को एकाग्र करके आप अपने आप जीवन की समस्त बाधाओं और कठिनाईयों को दुर कर वांछित सफलता प्राप्त कर सकते हैं विचारों की शक्तिो से पहाड को भी हटाया जा सकता है । मनुष्य एक विचारशील प्राणी है, किसी भी कार्य को करने से पहले हमारे मन में उसको करने का विचार आता है ।

यह मानव के विचारों की ही शक्तिक है, जो आज वह अंतरिक्षयानों के द्वारा घ्ऐसे महान व अद्भुत कार्य कर रहा है जिस की पहले कल्पना ही की जा सकती थी । ध्यान रहे, एक मुर्ख और वैज्ञानिक विचारों में भौतिक अंतर होता है, जहां एक मुर्ख के विचार तर्कहीन और बेतुके होते हैं, वहीं वैज्ञानिक के विचार तर्कसंगत, व्यवस्थित, तथा प्राकृतिक नियमों पर आध ाारित होता है । जीवन में सफल होने के लिए एक वैज्ञानिक की तरह विचार करना अवश्यक होता है ।



पेड़ों की कीमत



श्री यश नायक,
पुत्र - श्री रितेश आनंद,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

यह साल 3049 है यहा कोई भी पेड़ पौधे नहीं है क्योंकि सारे पेड़ पौधे पूर्व में ही काट दिए गए थे (साल 2023 में) यहाँ के सारे लोग परेशान रहते है क्योंकि यहाँ अहक्सीजन की भरी कमी है लोगों को स्थिर जगह पर स्वास लेने के लिए ऑक्सीजन रूम में शुल्क ध्कीमन देकर सांस लेनी पड़ती थी एवं एक जगह से दूसरे जगह जाने में अपने पीठ पर अहक्सीजन सिलेन्डर लेकर खुद के लिए सांस लेने का प्रबंध करना पड़ता था । इन परेशान लोगों में से एक जिसका नाम लूना था वह बहुत ही समझदार है वह चाहता है कि वह एक समय यंत्र यानी कि टाइम मशीन बनाए जिससे वह साल 2023 में जाकर सारे लोगों को पेड़-पौधों को बचाने के लिए जागरूक कर सके इसलिए वह हर दिन समय यंत्र बनाने की कोशिश करता था और इसी प्रयास में लगा रहता था । एक दिन वह अपने मेहनत में कामयाब हुआ और समय यंत्र बनाने में सफल हो जाता है फिर वह इसके द्वारा साल 2023 में जाता है, वहाँ पहुँचकर सारे लोगों को इकट्ठा करता है एवं अपने द्वारा सभी को पेड़-पौधे लगाने के लिए जागरूक करता है, फिर भविष्य में इसकी कमी से होने वाली परेशानियों के बारे में भी बताता है कि आने वाली पीढ़ी को कैसे बिना पेड़ पौधे के जीवन जीने में कितने प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा इसके क्या-क्या दुषपरिणाम होंगे, अतः लोगों को पेड़ पौधे लगाना चाहिए एवं उसका संरक्षण करना चाहिए । इस तरह से वह 2023 के लोगों को लोगों में जागरूकता जागा कर वापस टाइम मशीन से अपने 3049 में वापस लौट गया । वापस लौटने पर वहाँ वे लोगों में खुशी की लहर देखकर एवं पेड़-पौधों की हरियाली को देखकर काफी प्रसन्न हुआ।







दिनांक 14/09/2022 और 15/09/2022 को सूरत (गुजरात) में हिंदी दिवस समारोह एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी अभिभाषण देते हुए ।



दिनांक 14/09/2022 और 15/09/2022 को सूरत (गुजरात) में हिंदी दिवस समारोह एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर प्रतिभाग करते हुए इस कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी ।



दिनांक 14/09/2022 और 15/09/2022 को सूरत (गुजरात) में हिंदी दिवस समारोह एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर प्रतिभाग करते हुए कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.), शिलांग के अधिकारी एवं कर्मचारी ।





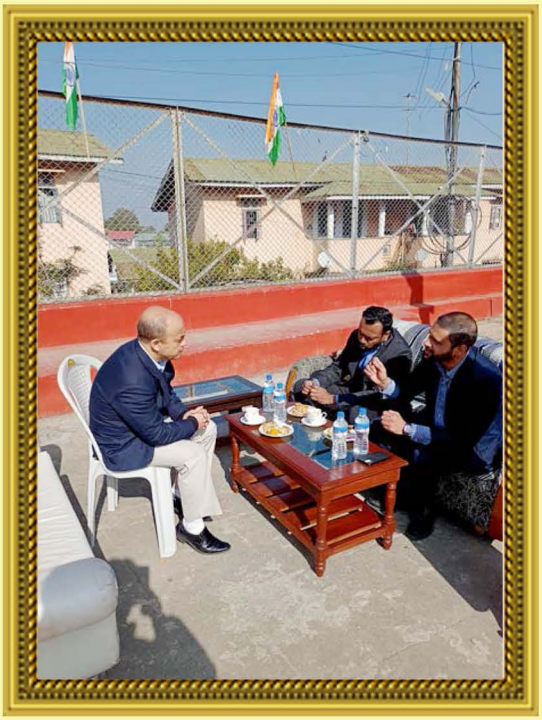
श्री सागर विजय काळे, उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा गणतंत्र दिवस 2023 के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया ।



श्री फेडेरिक सिएमलेह, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा गणतंत्र दिवस 2023 के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया ।



डॉ. डी. अनिश, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा गणतंत्र दिवस 2023 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया ।



गणतंत्र दिवस 2023 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के परिसर में झंडा फहराने के पश्चात समूह अधिकारियों द्वारा जलपान करने की एक झलक ।





श्री सागर विजय काळे, उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2023 के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया ।



श्री केल्विन हैरिस खर्शिंग, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2023 के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया ।



श्री मैथ्यूस मैथ्यू, उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2023 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया ।



स्वतंत्रता दिवस 2023 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के परिसर में झंडा फहराने से पूर्व स्टाफ के बच्चों द्वारा रैली प्रदर्शन की एक झलक ।



स्वतंत्रता दिवस 2023 के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के क्लब हॉल में नृत्य प्रस्तुत करती हुई बच्ची ।



स्वतंत्रता दिवस 2023 के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के क्लब हॉल में गीत प्रस्तुत करती हुई बच्ची ।



स्वतंत्रता दिवस 2023 के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनन्द लेते हुए समूह अधिकारी एवं कर्मचारीगण ।



स्वतंत्रता दिवस 2023 के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम के उपरांत श्री केल्विन हैरिस खर्शिंग, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा पुरस्कार प्रदान करने की एक झलक ।



स्वतंत्रता दिवस 2023 के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम के उपरांत डॉ. डी. अनिश, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा पुरस्कार प्रदान करने की एक झलक ।



श्री सागर विजय काळे, उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग स्वतंत्रता दिवस 2023 के अवसर पर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए ।





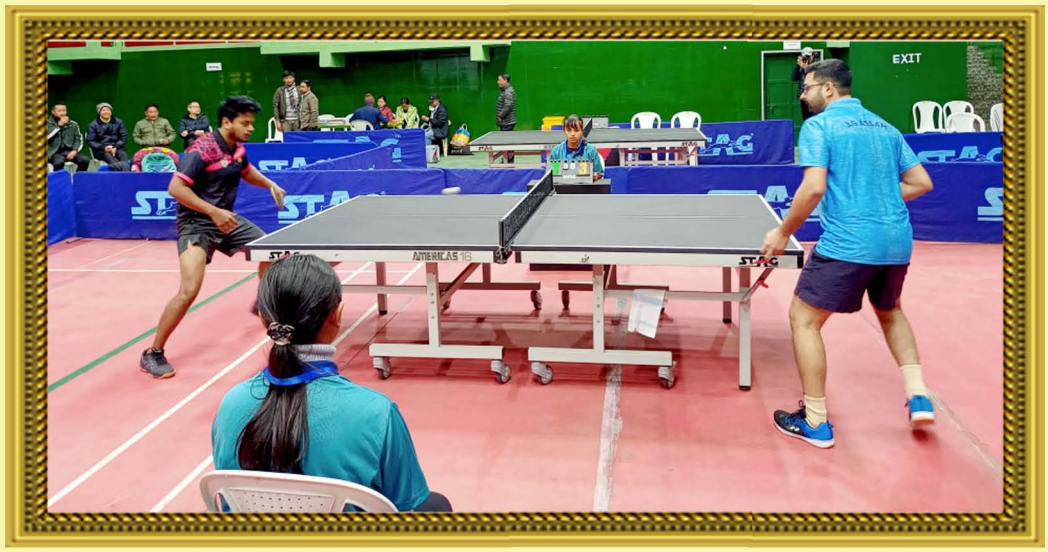
आजादी का अमृत महोत्सव के दूसरे वर्ष के जश्न के उपलक्ष में एन.ई.सी. आमंत्रण फुटबॉल टूर्नामेंट 2023 के अवसर पर दिनांक 11/08/2023 को पोलो मैदान में आयोजित फाइनल मैच का आनन्द लेते हुए मुख्य अतिथि श्री गइगओंडिन पनमिइ, आई.आर.एस., एन.ई.सी.,शिलांग के वित्तीय सलाहकार सहित कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के अधिकारी एवं कर्मचारीगण ।



आजादी का अमृत महोत्सव के दूसरे वर्ष के जश्न के उपलक्ष में एन.ई.सी. आमंत्रण फुटबॉल टूर्नामेंट 2023 के अवसर पर दिनांक 11/08/2023 को फाइनल मुकाबले में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के खिलाड़ियों ने मेघालय ऊर्जा निगम लिमिटेड को 3-0 से पराजित किया तथा मैदान में ट्राफी एवं चैक सहित समूह अधिकारियों के संग ए.जी. मेघालय टीम की एक झलक ।



आजादी का अमृत महोत्सव के दूसरे वर्ष के जश्न के उपलक्ष में एन.ई.सी. आमंत्रण फुटबॉल टूर्नामेंट 2023 के अवसर पर दिनांक 11/08/2023 को आयोजित फाइनल मुकाबले में 3-0 से जीत दर्ज कराने के पश्चात मैदान में ट्राफी एवं चैक सहित दोनों कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ ए.जी. मेघालय टीम ।



दिनांक 30-12-2022 को पोलो मैदान के इंडोर स्टेडियम में आयोजित नार्थ ईस्ट जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट के अवसर पर फाइनल मुकाबला खेलते हुए प्रतिभागीगण ।





श्री एस. सामीदुरै, उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा दिनांक 30-12-2022 को पोलो मैदान के इंडोर स्टेडियम में आयोजित नार्थ ईस्ट जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट के अवसर पर फाइनल मुकाबले के फश्चात ए.जी. असम, विजेता टीम को ट्राफी प्रदान करते हुए एवं धन्यवाद ज्ञापित करते हुए ।



दिनांक 30-12-2022 को पोलो मैदान के इंडोर स्टेडियम में आयोजित नार्थ ईस्ट जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट के अवसर पर फाइनल मुकाबले का आनंद लेते हुए कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के अधिकारी एवं कर्मचारीगण ।



दिनांक 28 से 30-12-2022 तक पोलो मैदान के इंडोर स्टेडियम में आयोजित नार्थ ईस्ट जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट के उद्घाटन के अवसर पर विराजमान समूह अधिकारी, स्थापना अधिकारी, कोच आदि ।



दिनांक 28-12-2022 को पोलो मैदान के इंडोर स्टेडियम में आयोजित नार्थ ईस्ट जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट खेलते हुए प्रतिभागीगण ।



दिनांक 28 से 30-12-2022 तक पोलो मैदान के इंडोर स्टेडियम में आयोजित नार्थ ईस्ट जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट के अवसर पर खेल का आनंद लेते हुए कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के अधिकारी एवं कर्मचारीगण ।

कृष्ण लीलाएं - एक रहस्य

श्री चिराग राजपूत,
पुत्र - श्री राजेश कमल राजपूत,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

क्या आप जानते है कि माखन चुराना, मटकी फोड़ना, वस्त्र चुराना, बंसी बजने का रहस्य ? आइए जाने।



माखन चुराना - मथुरा में कंस का राज्य था और गोपा-लज गोकुम में रहते थे । गोपियाँ लालचवाश सारे का सारा दूध, दही व माखन मथुरा में बेच आती व ग्वाल बाल इससे वंचित रह जाते । उधर कंस के राज्य में राक्षस वलिष्ठ होते जा रहे थे इसलिए बाल कृष्ण ने ग्वाल बालों के साथ मिलकर बारी दृ बारी सभी के घरों से माखन चुराकर खाना शुरू कर दिया ।

मटकी फोड़ना - क्यों कि ग्वालिने अपना सारा दूध - दही व माखन मथुरा बेच आने, बाल कृष्ण ने अपने पिता वासुदेव जी, जो कि गांव के मुखिया थे, से कहा कि इन ग्वालिनों को सारा दूध - दही व माखन बेच आने से पहले कुछ गांव वालों के लिए भी रखना चाहिए, सहसा वासुदेव जी ने इस बात को सभी को बताया । मगर मुखिया की बात न मानकर भी कुछ गोपिया छिपकर चुंगी लगाए बिना निकलने लगी तब बाल कृष्ण ने अपने साथियों के साथ गुलेल से मटकियाँ फोड़नी शुरू कर दी, वे कहते "ऐ गोपी चुंगी लगाकर जाओ न । इस संदर्भ को मुगल कवियों ने इस तरह कुछ यूं तोड़ा-मरोड़ा कि गोपियाँ कहनी लगी कि हमे कृष्ण ने छेड़ा, बैया मरोड़ी और मटकी भी फोड़ दी ।



बंसी बजाना - श्री कृष्ण जब अपनी गायों को चराने ले जाते, चरते - चरते गायें बिखर जाती । श्री कृष्ण डंडो के साथ गायो को इकठ्ठा न करते अपितु अपनी बंसी बजाते । प्रत्येक पालतू पशु अपने मालिक की आहत पहचानता है सो सारी गायें बंसी सुनकर वापस इकट्ठी हो जाती । इस वाक्य को भी यूं तोड़ा - मरोड़ा गया कि श्री कृष्ण बंसी बजाकर गोपियों को मोहित करते ।

वस्त्र चुराना - श्री कृष्ण गोपियों के वस्त्र अक्सर चुरा नहीं लिया करते थे, बस एक बार उठाए थे। गोपियाँ साफा लपेट कर यमुना स्नान के लिए चली जाती, वे उन्हे ऐसा करने से रोकना चाहते थे कि अगर कोई पथिक उनके वस्त्र चुरा ले तो, इसके बाद गोपियाँ कभी इस तरह से स्नान के लिए नहीं गई ।



छुट्टियों का आनंद, मुहावरों के संग

सुश्री दिया राजपूत,
पुत्री - श्री राजेश कमल राजपूत,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हम बच्चे को जब भी छुट्टियाँ होती है तो हम खुशी से फूले नहीं समाते क्योंकि स्कूल की पढ़ाई करना हमे टेढ़ी खीर लगता है इस बार जब सर्दियों की छुट्टियाँ हुई तो हमारा भी यही हाल था । पहली छुट्टी के दिन ही हमारी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था । हमे लगा जैसे हम आसमान में उड़ रहे है । अब तो हमारी पांचों उँगलियाँ घी में थी और सर कढ़ाही में हम अब घोड़े बेचकर सोते और सुबह देरी से जागते । फिर टीवी के आगे आराम से बैठकर नशता करते जैसे हम काही के नवाब हो ।

दोपहर के समय मे अपने दोस्तों को घर बुलाता । वहाँ हम खूब मस्ती करते । हम सब मिलकर धमाचौकड़ी मचाते और आसमान सिर पर उठा लेते । मम्मी इस सब को देखकर आग बबूला हो जाती । मम्मी को इस तरह "लाल - पीला" होते देखकर मेरे दोस्त वहाँ से नौ - दो ग्यारह हो जाते ।

फिर शाम के समय हम टी वी देखने या मोबाइल पर गेम्स खेलने बैठ जाते । मम्मी हमे गुस्सा करती कि मोबाइल पर क्यों आंखे गड़ाए बैठे हो थोड़ा पढ़ लो । लेकिन हमारे कानों पर "जूं न रेंगती ।" फिर जब हम दोस्तों के साथ बाहर से खेलकर आते और अपने मनपसंद खाने की फरमाइश ऐसे करते जैसे कि हम किला फतह करके आए हो ।

इस प्रकार दिन सरकने लगे और हमारी छुट्टियाँ समाप्त हो गई । अब तो हमारे हाथ - पाँव फूलने लगी चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी । ऐसे लगा जैसे हमारे सिर पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा हो । प्री बोर्ड परीक्षा के बारे में सोच सोच कर हमारी रोटी की नींद उड़ गई और दिन का चौन खो गया ।

अब सुबह जल्दी उठना, तैयार होकर स्कूल जाना, वहाँ पढ़ाई करना ये सब सोच कर हमे दिन मे तारें नजर आने लगे । लेकिन अब कोई चारा न था । हमने भगवान के आगे माथे रगड़े कि डीसी छुट्टियाँ बढ़ा दे, लेकिन हमारी एक न चली । हमने भी अब तो घुटने टेक दिए थे । हम मुह लटकाते हुए स्कूल आ गए ।



एक मुस्कान

श्रीमती रेखा राजपूत,
पत्नी - श्री राजेश कमल राजपूत,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक दिन थी मैं परेशान
जा बैठी एक बगीचे मे उस शाम
सहसा मेरी नजर पड़ी एक गुलाब पर
मुस्करा रहा था वह
शायद, मेरी खिल्ली उड़ा रहा था वह
मैंने पूछा उससे क्यों मुस्करा रहे हो इतना ?
दो दिन की जिंदगी है तुम्हारी
फिर भी इठला रहे हो इतना ?
गुलाब बोला
दो दिन की जिंदगी है तो क्या
एक दिन भी होता तो मैं यूं ही
इठलाता, मुस्कराता
इसके अलावा मुझे कुछ आता भी तो नहीं है
बताओ क्या कर लिया तूने
60 की जिंदगी पाकर
जिसने दौड़ाए रखा है तुझे, कुछ न कुछ
पाने की चाह में
क्या इस जीवन का लुत्फ उठाया तूने
मानुष जन्म पाकर मेरी तरह मुस्कराया तूने
क्यों हो परेशान
उठो, मुस्कराओं, खुशियाँ लुटाओ तुम जग को
स्वयं खुश रहो
हंसो, हँसाओ तुम सबको





चाय की खेती

मुहम्मद अरिफुल हक
भाई - मुहम्मद जियाऊल हक
वरिष्ठ अनुवादक



परिचय :- मानव समाज अपने शरीर की रक्षा एवं पुष्टि के लिए चार प्रकार की चीजें खाता है - 1. चर्व्य यानि चबाकर खायी जाने वाली, 2. चोष्य या चूसकर खायी जाने वाली, 3. लेध्य यानि चाट कर खायी जाने वाली और 4. पेय या पीनेवाली। चाय उन चीजों में आती है, जिन्हें मानव पीता है।

चाय का आविष्कार :- पहले पहल असम में चाय की खेती नहीं होती थी । परन्तु जंगली पौधों के रूप में चाय असम के पूर्वी हिस्से के जंगलों में अपने आप ही उगा करती थी तथा सर्दी-जुकाम होने पर लोग इसके पत्ते पानी में उबाल कर पिया करते थे । जब अंग्रेजों ने असम पर अपना अधिकार जमा लिया था, तब यहाँ के जंगलों में चाय के पौधे होने का पता चला। उन लोगों ने इसके बाद असम में चाय की खेती करने की ओर ध्यान दिया। कुछ दिनों तक परीक्षण चलाने के पश्चात यह निश्चित हो गया कि असम की जलवायु चाय की खेती के लिए अत्यन्त उपयोगी है ।

असम में चाय की खेती :- पहले पहल चीन से ही चाय की बीज मँगाकर कलकत्ते के "बोटानिकल गार्डन" में पौधे उपजाये गए और उन्हें वहाँ से लाकर असम में रोपा गया था । पर बाद में देखा गया कि असम में पैदा होने वाली चाय की बीज ही यहाँ आसानी से उगते हैं । डिब्रुगड़ के पास जिस जगह में चाय के पौधे सबसे पहले रोपे गए थे, उसे "चाबोवा" यानी "चाबुवा" कहते हैं ।

तब से लेकर आज तक इस उद्योग की दिन-ब-दिन तरक्की होती गयी । आज दुनिया में चाय उत्पादक देशों में भारत प्रमुख गिना जाता है और भारत की चाय का सबसे ज्यादा हिस्सा असम में पैदा होता है ।





खेती के तरीके :- चाय खासकर उष्णमंडलीय अंचल में जहाँ काफी वर्षा होती है पर पानी जमीन में रूकता नहीं ऐसी ऊँची जगहों में होती है । असम की पहाड़ियों में काफी वर्षा होती है और साथ ही यहाँ पानी देर तक रूकता भी नहीं। इसलिए चाय की खेती यहाँ बड़े पैमाने पर सम्भव हो सकी है । जमीन पर यदि कुछ लोहे का अंश रहे तो वह चाय के लिए बड़ी उपयोगी होती है । यहाँ की जमीन में वह गुण भी पर्याप्त मात्रा में मौजूद है ।

चाय के बीज पहले किसी छायादार जगह में बोये जाते हैं । जब उनके पौधे कुछ बड़े हो जाते हैं तो उन्हें वहाँ से उठाकर अन्यत्र रोपा जाता है । चाय के पौधे को रोपने के पहले पहाड़ी या टीले में काटकर सीढ़ीदार बना लिया जाता है और बीच-बीच में सीरिस आदि छायादार पेड़ लगाए जाते हैं । बाद में क्यारियाँ बनाकर डेढ़-दो फुट के फासले पर चाय के पौधे रोपे जाते हैं।

चाय के पौधों में खाद डालना भी आवश्यक होता है । रोपने के एक-डेढ़ साल बाद चाय का पौधा पत्तियाँ देने लायक बन जाता है । तकरीबन फागुन या चौत के महीने से पत्तियों की चुनाई शुरू होती है और महीने-डेढ़ महीने के अन्तर अगहन या पौष महीने तक यह सिलसिला जारी रहता है । इसके बाद बढ़ी हुई डालियाँ छाँटकर या कलम कर पौधों को गुच्छेदार बनाया जाता है, जिससे पत्तियाँ अधिक पनपने की सुविधा पाती हैं ।

चाय की किस्में :- चाय मुख्यतः दो किस्मों की होती है दृ हरी चाय और काली चाय । भारत और पश्चिमी देशों में काली चाय का इस्तेमाल अधिक किया जाता है । दो किस्मों की चाय पत्तियाँ बनाने के भेद से बनती हैं । चीन, रूस तथा अन्य कई देशों में हरी चाय की खपत ज्यादा है । असम में एक ही पौधे से दोनों तरह की जाय बनायी जाती है ।

चाय बागान का वर्णन :- एक विस्तृत इलाके में चाय के पौधे लगाये जाते हैं, जिसे चाय बागान कहते हैं । चाय बागान में ही चाय के कारखाने होते हैं । चाय की पत्तियाँ तोड़कर "धूपधार" नाम के कुछ खुले मकानों में फैला दी जीती है । लगभग 12 (बारह) घण्टे वहाँ रखने के बाद उन पत्तियों को कारखाने की मशीनों में डाला जाता है, जिसमें कुटाई, पिसाई और भुनाई भी होती है । चाय बागानों में सैकड़ों मजदूर प्रतिदिन काम करते हैं ।

चाय पत्ती बनाने के तरीके :- इसके दो तरीके हैं - (1) पुराना तरीका और (2) नया तरीका । पुराने तरीके के अनुसार चाय के पौधों से कोमल पत्तियाँ तोड़कर कुछ देर धूप में रखने के बाद उन्हें हाथ से अच्छी तरह चूरा बनाकर चूल्हे पर कढ़ाही में भून लिया जाता है । भूनी पत्तियाँ काली हो जाने पर कढ़ाही से उतार ली जाती है और बाद में जरूरत के मुताबिक उसका इस्तेमाल किया जाता है । नए तरीके में सारे कार्य यंत्रों से बहुत बड़े पैमाने पर अत्यन्त शीघ्रता से किया जाता हैं ।



चाय से लाभ :- वर्तमान युग में चाय विश्व का सर्वप्रमुख पेय बन गयी है । चाय उत्तेजक होने के साथ-साथ शरीर में स्फूर्ति भी ला देती है । तिब्बत आदि देशों में कहीं-कहीं चाय का उपयोग पेय के रूप में न होकर मक्खन आदि के साथ खायी जाती है । कुछ लोगों के मतानुसार भारत जैसे गर्म देस में अधिक चाय पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है । परन्तु पश्चिमी देशों में जहाँ अधिक ठँड पड़ती हैं, चाय पीना फायदेमंद माना जाता है । चाय विभिन्न प्रकार के रंग बनाने के काम में भी आती है ।

उपसंहार :- व्यवसायिक दृष्टि से देखने पर चाय असम की आर्थिक स्थिति को बहुत हदतक मजबूत बनाए हुए हैं । इस उद्योग से लाखों लोगों को जीविका उपार्जन का स्रोत मिला है। इससे सरकार को भी करोड़ों रूपयों की आमदनी होती है । विदेशी मुद्रा अर्जित करनेवाली चीजों में असम की चाय का स्थान प्रमुख है ।



चुटकुले

श्री राजेश कमल राजपूत,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक राजनैतिक दल के चुनाव टिकट देने से पहले उम्मीदवार का इंटरव्यू लिया ।
दल का वरिष्ठ नेता (उम्मीदवार से) : यदि कोई आदमी प्यासा मर रहा हो तो तुम क्या करोगे?



उम्मीदवार : उसे थोड़ा पानी पिला दूंगा ।
नेता : और अगर उस वक्त पानी न मिला तो ?
उम्मीदवार : कोई बात नहीं, मैं उसे जी भर आश्वासन दे दूंगा ।

एक घर के दरवाजे की डोरबेल के नीचे लिखा था,
कृपया घंटी बाजा कर इंतजार करें, लगातार घंटी न बजाए क्योंकि आने वाला चल कर आएगा, उड़ कर नहीं ।

पति खाना खाने जा रहा थे कि तभी एक चूहा उन की थाली से गुजर गया ।
पति : मैं अब यह खाना नहीं खा सकता ।
पत्नी : चुपचाप खा लो ..... चूहे ने कौन सी चपप्ले पहन रखी थी ।

पत्नी यदि पति की बात सुनकर चिल्ला कर क्या कहा कहे तो इसका मतलब यह नहीं कि वह दुबारा बोलने को कह रही है, बल्कि इस का मतलब यह है कि वह पति को अपनी बात बदलने का मौका दे रही है ।

एक दफा एक आदमी जोर-जोर से चिल्ला रहा था : हमारे नेता निकम्मे है ।
एक सिपाही ने यह सुना तो उस आदमी की गर्दन पकड़ कर दो थप्पड़ रसीद करते हुए कहा : चल थाने, हमारे नेताओं की बेइज्जती करता है ।



तब वह आदमी हाथ जोड़ कर बोला : साहब मैं तो यह कह रहा था कि फरांच के नेता निकम्मे है। यह सुनकर सिपाही ने उसे दो थप्पड़ और लगाए और बोला : हमे बेवकूफ बनाता है ?..... क्या हमे नहीं पता कि कहाँ के नेता निकम्मे है ।



गरीबी

श्रीमती मिशा,
भतीजी - श्री राजेश कमल राजपूत,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक दिन रास्ते में मिल गई गरीबी
मैंने पूछा, क्या हाल है बड़ी बीबी ?
काफी दिन हुए तुम्हें इंडिया में,
कुछ दिन के लिए मायके चली जाओ ।
विदेश जाकर अपनी माता जी से मिल आओ ।
गरीबी बोली,
इस देश में मेरी जन्म-जन्म का नाता है,
भला ऐसे भी कोई घर धोड़कर जाता है ।
फिर आजकल मेरा नाम चुनाव जीतने के काम आता है ।
मैं नहीं रहूँगी तो ये किसे हटाएँगे,
चुनाव लड़ना ही भूल जाएंगे ।
फिर भारत तो मेरे पति का घर है,
भरी जवानी में आई थी,
अब बुढ़ापे मे कहाँ जाऊँगी ।
डोली में बैठकर आई थी,
कंधो पर सवार होकर जाऊँगी
मैं तो कंधो पर सवार होकर जाऊँगी ।





चल रे मटके ठम्मक टूँ

हुए, बहुत दिन बुढ़िया एक,
चलती थी लाठी को टेक ।
उसके पास बहुत था माल,
जाना था उसको ससुराल ।
मगर रह में चीते, शोर,
लेते थे रही को घेर ।
बुढ़िया ने सोची तदबीर,
जिससे चमक उठे तकदीर ।
मटका एक मंगाया मोल,
लंबा-लंबा गोल-मटोल ।
उसमें बैठी बुढ़िया आप,
वह ससुराल चली चुपचाप ।
बुढ़िया गाती जाती यूँ,
चल रे मटके ठम्मक टूँ ।



श्री शौर्य मिश्रा,
पुत्र - श्री विनोद कुमार,
सहायक निदेशक
(हि.शि.यो., शिलांग)

आजादी



सुश्री स्निग्धा मिश्रा,
पुत्री - श्री विनोद कुमार,
सहायक निदेशक
(हि.शि.यो., शिलांग)

पंछी है कैद अगर,
तो उड़ने में कर मदद तू ।
रात है काली अगर,
दिया जला कर रोशन कर तू ।
बीत गए कई साल रुढ़िवादी विचारों में उलझ कर,
सुलझा मन के भाव तू ।
औरत, आदमी या हो कोई बच्चा ।
सबके जीवन का कर सम्मान तू ।
तोड़ दे दिवारे सारी,
आगे बढ़ विजयी राह पर ।
उन वीरों ने क्या पाया,
अगर तू अब भी डर में खोया ।
उठ जा तू, छू ले आसमान,
आजादी पे है सबका हक ।

सपनें



श्री संदरसन सुन,
डी.ई.ओ. ग्रेड 'बी'

अराजकता के बीच,
एक अकेला आत्मा जागती रहती है ।
क्या बारिश कभी रुकेगा ?
क्या सूरज चमकेगा ?

क्या यह वह प्रश्न है आप पूछ रहे है ?
था वह उत्तर है जिसे आप तलाश रहे है ।
जबकि हम आशा के आने की प्रतीक्षा कर रहे है,
तभी जीवन हमारे पास से गुजरता है ।

बिलकुल सागर जितना चौड़ा ।
और आकाश के समान नीला ।
सपने अनंत है,
इसलिए उनका तब तक पीछा करें जब तक
आपकी साँसे थम न जाएँ ।

लेकिन अगर पीछा करना गलत है ।
और मौन सुनहरा है ।
ठीक वैसे हि जैसे युद्धों ने हजारों लोगों की जन ले ली,
फिर खामोशी ने हजारों सपनों को मार डाला ।





जग में सबसे प्यारी माँ

श्री दिलीप कुमार क्षेत्री
एम.टी.एस.



अति सुंदर अति न्यारी माँ,
जग में सबसे प्यारी माँ ।
देखो इसकी सुंदर काया,
इसकी अपनी अद्‌भूत माया ।

हर मुश्किल में हाथ बढ़ाया,
और दिया ममता की छाया ।
चलना हमें सिखाती माँ,
पढ़ना हमें सिखाती माँ ।

हर उलझन सुलझाती माँ,
मंजिल हमें दिखाती माँ ।
अति सुंदर अति न्यारी माँ,
जग में सबसे प्यारी माँ ।

हम सब बच्चे

सुश्री वेरेनिका क्षेत्री
नातिनी - श्री दिलीप कुमार क्षेत्री
एम.टी.एस.

हम सब बच्चे दिल के सच्चे,
करते काम सदा ही अच्छे ।
रोज सुबह हम जल्दी उठते,
और रात्रि में जल्दी सोते ।



खुश होकर हम पढ़ते-लिखते,
खेल-कूद में आगे रहते ।
गुरूजनों का आदर करते,
प्रभु के आगे शीश झुकाते ।



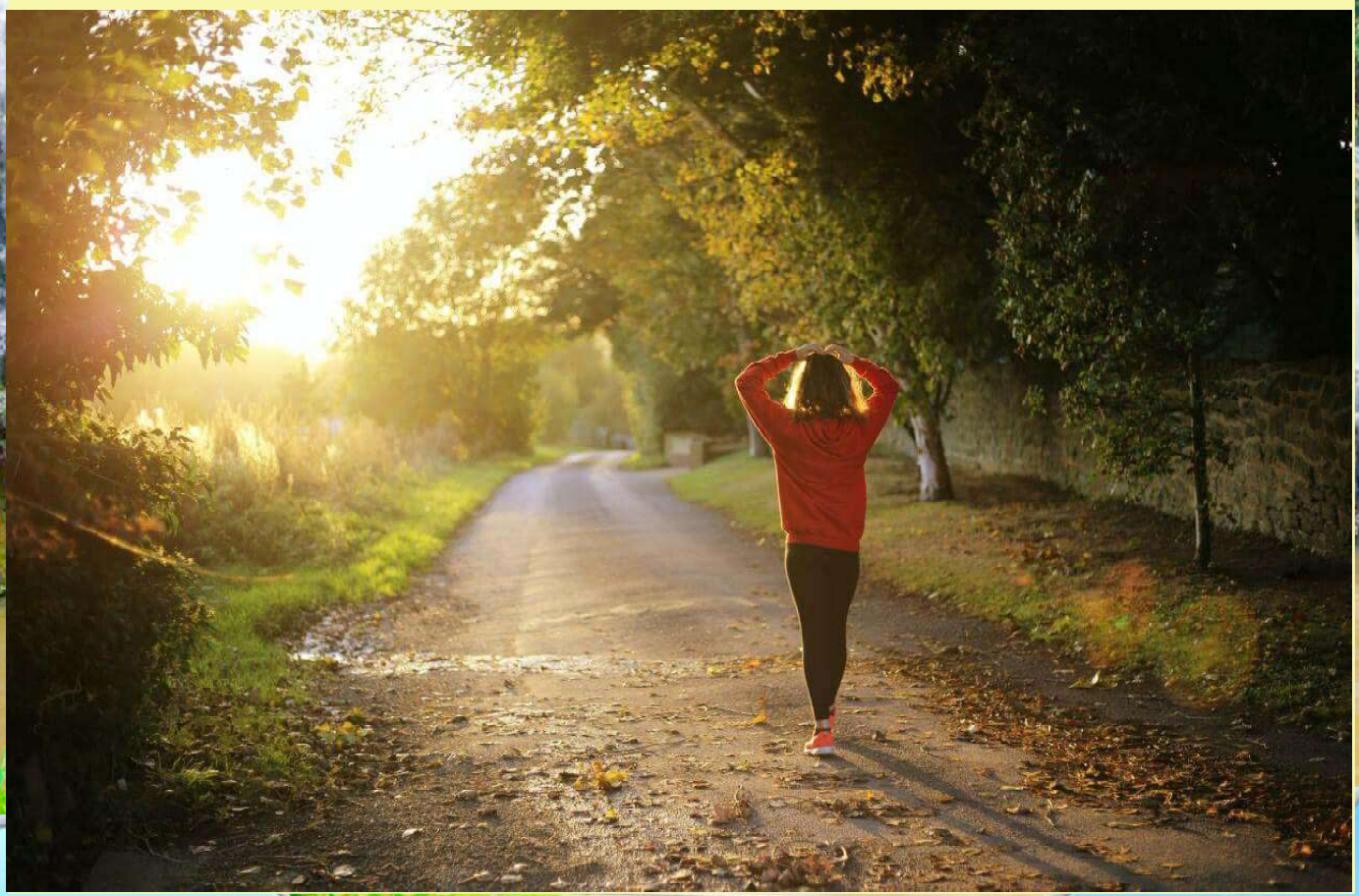
सुबह

श्रीमती अनिमा क्षेत्री
पत्नी - श्री दिलीप कुमार क्षेत्री
एम.टी.एस.

हुई सुबह छाई लाली,
उपवन सींच रहा है माली ।
कुकड़ूँ-कूँ मुरगा बोला,
लाल हुआ सूरज का गोला ।

ठंडी-ठंडी हवा चली,
सबको लगती बहुत भली ।
ची-ची चिड़ियाँ बोली,
कानों में मिसरी सी घोली ।

तुम भी अपनी आँखें खोलो,
उठकर अब अपना मुँह धोलो ।
फिर ईश्वर का ध्यान करों,
गुरूजन का भी सम्मान करो ।





भक्ति

(वर्ष 2022 को हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिन्दीतर भाषी अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए हिन्दी कविता लेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कविता ।)



श्री राज्यपाल देवकोटा
सहायक लेखा अधिकारी
लेखा एवं हकदारी कार्यालय

देखु तेरी और एकटक,
मन – मस्तिक मे बस एक छवि,
निर्मल काया, ममत्व से भरी नयन,
तुझ प्रति जागे मन में मोक्त ।

आँख खुली और नजर मे तूँ,
दुनिया लगे कितनी सुहानी,
छटा तेरी मुहार मे भरी इतनी
आसपास नजर हो न जाये ।

हाथ पकड़कर दुनिया दिखाया,
नजरों से अपनी इसे समझाया,
गुड़ रहस्य जीवन का बताया,
तूँ न होती तो क्या बन पाता ।



दुत्कार मिले जब कभी किसी से,
तुने तो हमेशा पुचकारा,
होशिला मन में मेरे भरकर,
आगे कदम बढ़ाना सिखाया ।

हर कोई कहे, ईश्वर भक्ति सर्व परे
सही दिशा दे जीवन का जो
मैं कहूँ मातृ भक्ति से बड़ा क्या कोई
बान, दिशा से आगे प्रथमतः जीवन दे जो ।



भक्ति

(वर्ष 2022 को हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिन्दी भाषी अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए हिन्दी कविता लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कविता ।)



श्री नीरज कुमार गुप्ता,
डी.ई.ओ.
लेखा एवं हकदारी कार्यालय

मानवता का स्वभाव है,
हृदय में बस्ती भाव है, !
धनघोर तपिस में छाँव है,
तत्सम – तदभाव – सम्भव है !!

विश्वास का श्रृंगार है,
ज्वलंत भावों का अंगार है, !
अकारित किन्तु निराकार है,
अदृश्य होकर भी साकार है !!

त्राहित – शक्ति – मुक्ति है,
त्याग – तप की अभिव्यक्ति है, !
मोक्ष – मुक्ति – दृष्टि है,
आसक्ति में छिपी विरक्ति है !!

भक्ति

(वर्ष 2022 को हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिन्दी भाषी अधिकारियोंध्कर्मचारियों के लिए हिन्दी कविता लेखन प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार प्राप्त कविता ।)



श्री सुरेन्द्र कुमार,
आशुलिपिक.
लेखा एवं हकदारी कार्यालय

कि मीरा श्याम की भक्ति में, ऐसे डूब जाती है,
न सुबहा की खबर होती न शाम याद आती है,
अगर ढूँदे कोई भगवान को धरती पर यहाँ आके, -2
तो मीरा याद आती थी और मीरा याद आती है ।
अगर मझधार में नैया जो डूबे, तो सहारा है,
भँवर जो डर है उसका तो, भक्ति ही किनारा है,
इस कलयुग की दुनिया में, सभी ने सबको बिसारा है, -2
ये भक्ति की ही शक्ति है, जो भगवान ही हमारा है ।
कोई सोचे, कोई समझे, कोई जाने, कोई माने,
ये भक्ति थी अहिल्या की, जो उसको राम जी तारे,
इस मतलब की दुनिया में कहाँ कोई समझता है, -2
मगर ये सच है के हर युग मे भगवान भक्ति से हरे ।



देश प्रेम

(वर्ष २०२२ को हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिन्दी भाषी अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए हिन्दी कविता लेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कविता ।)



श्री मिथिलेश कुमार,
लेखापरीक्षक
लेखापरीक्षा कार्यालय

देश के किसान, घर घर जवान ।
यही है हमारे देश–भक्ति की पहचान,
हम रहे या ना रहे ।
लेकिन मेरा देश रहे,

ना करे कमी मजहब की बात ।
मिल कर करे इस देश की सुरक्षा की बात ।
क्या नेता, क्या अभिनेता ।
क्या मजदूर, क्या किसान ।
सबसे यही आहवान ।
हमेशा रहे मेरा देश महान ।

कमी न हो मेरा देश गुलाम ।
हमेशा सजग रहे जवान ।
यही है उस ईश्वर से आहवान ।
सुरक्षित रहे मेरा देश महान ।

देश–प्रेमी हर कोई कहते,
हर कोई देश प्रेमी नहीं होते
जहां आग संकट पे प्राय
कुछ देश–द्रोही हो जाते फरार
ऐसे देश–द्रोहियों से आहवान
हमेशा सुरक्षा करे देश की आन
हमेशा रहे मेरा देश महान ।





प्रकृति

(वर्ष २०२२ को हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिन्दीतर भाषी अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए हिन्दी कविता लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कविता ।)



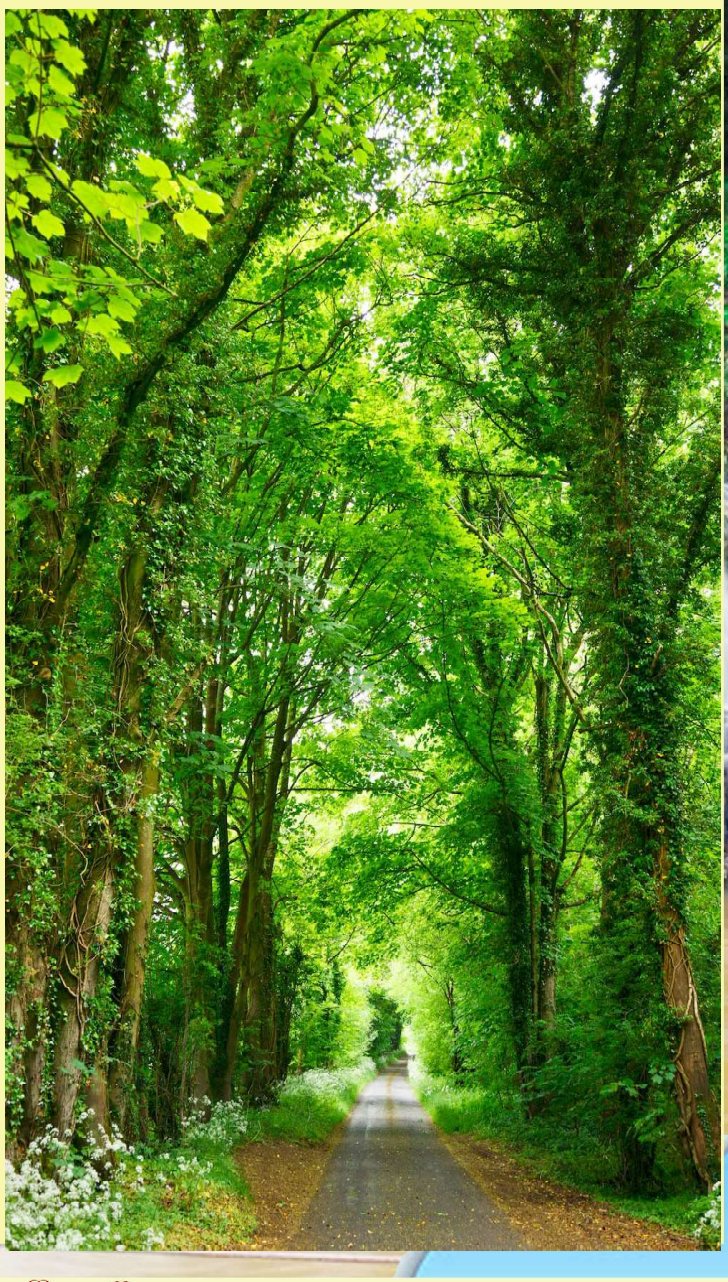
श्रीमती ग्रेसी हटनेऊ वाइफे,
डी.ई.ओ.
लेखा एवं हकदारी कार्यालय

धूप और बरसात मे पली बड़ी;
डर न कटों का न अंधकार की,
कच्ची धरती और रेट ये यरे;
हम ये प्रकृति की गोद मे खेले ।

गुलाब के फूल ये हर दिशा;
जख्मो के मल्हम पत्तों से बनाते,
हर मौसम का आनंद लेना;
हम ये प्रकृति की गोद मे खेले ।

कल्पना मे टहलते ये बादलों में;
उड़ती उड़ान देखते,
पक्षियों के सुर हमे सहलातेय
हम ये प्रकृति की गोद मे खेले ।

खुले आसमान की द्वार को खोल;
हम बढ़ते निश्चित मैदान की और,
लहरों से लड़ते जनवरों संग खेलते;
मन की मनोकामना यह है,
“प्रकृति हमे गोद ले ।”





प्रकृति

(वर्ष 2022 को हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिन्दीतर भाषी अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए हिन्दी कविता लेखन प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार प्राप्त कविता ।)



श्रीमती माधवी देब,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
लेखा एवं हकदारी कार्यालय

प्रकृति हमे जीना सिखाती है
प्रकृति के बिना जीवन अधूरा है
फल फूल सब्जी सभी प्रकृति की हाल है
प्रकृति के बिना जीवन अधूरा है ।

प्रकृति की यह सौन्दर्य देखकर
मन खुशी से भर उठती है
पशु, पक्षी और मानव सभी के रिश्ते
प्रकृति के साथ एक ही सूत्र में बंधे है ।

प्रकृति हमे दूसरों के लिए जीना सिखाती है
बड़े बड़े पेड़ हमे धूप से बचाती है
रंग बिरंगे फूलों के सुगंध से मन प्रफुल्ल होते
सही मे प्रकृति के बिना मानव जीवन अधूरा है ।





आजादी का अमृत महोत्सव

(वर्ष 2022 को हिन्दी पखवाड़ा के दौरान अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध ।)



श्री नीरज कुमार गुप्ता,
डी.ई.ओ..
लेखा एवं हकदारी कार्यालय

15 अगस्त 2022 के अत्यंत शुभ दिवस पर भारतीय स्वतन्त्रता की 75 वी वर्षगाँठ सम्पूर्ण भारत-वर्ष में सहर्ष स्वतन्त्रता उत्सव मनाया गया । वस्तुतः आजादी के अमृत महोत्सव की घोषणा सम्मानित प्रधानमंत्री जी द्वारा 15 अगस्त 2022 से 75 सप्ताह पूर्व अर्थात 12 मार्च 2021 को उद्घोषित की गई जो आगामी स्वतन्त्रता दिवस अर्थात 15 अगस्त 2023 तक आयोजित की जानी है ।

उपरोक्त उत्सव का शुभारंभ गुजरात के साबरमती आश्रम से की गई क्योंकि इसी स्थान से 12 मार्च 1930 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने अपनी प्रख्यात ढाँड़ी मार्च का शुभारंभ किया था जिसे अनैतिकता के विरुद्ध नैतिकता की पहल माना जाता है ।

आजादी के अमृत महोत्सव का प्रमुख उद्देश्य भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम एवं उसमे सम्मेलित समस्त ज्ञात एवं अज्ञात स्वतन्त्रता सेनानियों को पुनः स्मरण करना, युवाओं को उनके कर्तव्य दृनिष्ठा दृकर्मठता एवं बलिदान से अवगत करवाना तथा भारत के प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति के विशेषताओं को पुनः रेखांकित करना है । इस महात्सव के अंतर्गत भारत के लगभग सभी राज्य अनेक प्रकार के कार्यक्रमों, प्रदर्शनी, झांकियों एवं पुस्तकों के द्वारा इस उत्सव के उद्देश्य को प्राप्त करने में अपनी अतुलनीय भूमिकाओं का निर्वाहन कर रही है ।

हमारे सम्मानित स्वतन्त्रता सेनानियों जैसे महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, बाल गंगाधर तिलक आदि महापुरुषों को राष्ट्रीय पाठ्य-पुस्तकों में स्थान देने संबंधी परिचर्चा भी चल रही है । इस उत्सव के तहत हमारे प्राचीन हस्त दृ शिल्प, बुनाई, मृदु- कला आदि पुनः जीवित कर उसे भारतीय अर्थव्यवस्था के मुख्य धारा के समावेशित करने का प्रयास भी गतिशील है ताकि हमारे ग्रामीण अर्थव्यवस्था की 'सकल घरेलू उत्पाद 'में योगदान तीव्र एवं वांछित रूप से हो सके एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्दि से एक धारणीय जीवन का लक्ष्य प्राप्त हो सके ।

उपरोक्त उत्सव एक महत्वपूर्ण अंग लोक - स्वास्थ्य के क्षेत्र में आयुर्वेद एवं योग परंपाओं के द्वारा लोक दृ स्वास्थ्य के क्षेत्र में नवीन खोजो एवं शोधो को प्रोत्साहित करना भी है । इस उत्सव के द्वारा आधुनिक खेलो के साथ हमारे पारंपरिक खेल दृ पद्धतियों को भी उचित अवसर प्रदान करते हुए खेलो के प्रति लोगो में जागरूकता लाना एवं इसे एक सशक्त आर्थिक आधार प्रदान करना है । वास्ततः में यह उत्सव वर्ष 1047 एवं इससे भी पूर्व के भारतीय इतिहास की धाराओं में शामिल सभी महत्वपूर्ण आयामों को पुनः समय की सतह पर लाकर उसमे प्रेरणा प्राप्त करना एवं उसे पुनः प्रासंगिक बनाना है । इसके अतिरिक्त हमारी शक्ति अर्थात हमारे युवा पीड़ियों को भारत की विशाल संस्कृति एवं सभ्यता रूपी मिट्टी की महक से अवगत करवाना है ।



भारत में प्लास्टिक प्रयोग पर प्रतिबंध

(वर्ष 2022 को हिन्दी पखवाड़ा के दौरान अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त निबंध ।)



श्री भागीरथ प्रसाद,
डी.ई.ओ..
लेखा एवं हकदारी कार्यालय

प्लास्टिक प्रयोग पर प्रतिबंध लगाना अत्यंत ही आवश्यक है । इससे पर्यावरण प्रदूषण कम होता है । भारत सरकार द्वारा पूरे भारत में 1 जुलाई 2022 से एक बार उपयोग होने वाले प्लास्टिक पर पूर्णत प्रतिबंध लगाया गया है । एक बार उपयोग मे होने वाला प्लास्टिक पूर्णतः वर्जित है। हालांकि प्लास्टिक हमारी रोजमर्रा की जिंदगी मे शामिल है ।

सुबह उठकर ब्रास करने से लेकर शाम तक प्रयोग में आने वाले लगभग सभी सामानो मे प्लास्टिक का प्रयोग किया जाता है । यह हमारे कार्य शौली मे प्रयोग होने वाले सभी सामानों का एक अभिन्न अंग है । हम अचानक से पूर्ण रूप से प्लास्टिक का उपयोग करना बंद नहीं कर सकते है लेकिन धीरे-धीरे इसका प्रयोग कम जरूर कर सकते है । जहां तक संभव हो सके हमे इसका प्रयोग कम से कम करना चाहिए । इससे मानव जीवन ही नहीं अपितु जीव जंतुओं पर भी सकारात्मक असर पड़ता है ।

प्लास्टिक एक एस पदार्थ है जो आसानी से न तो सड़ता है न ही गलता है । इसे सड़ने गलने मे कई वर्ष लग जाते है । प्लास्टिक को जलाने से भी कई प्रकार के हानिकारक, प्रदूषक हैस उत्पन्न होता है । इसका मानव जीवन पर बहुत ही नकारात्मक असर पड़ता है । इससे कई प्रकार की गंभीर बीमारियाँ उत्पन्न होती है । जब प्लास्टिक नलियों, नाला द्वारा बहकर नदी, समुद्र मे जाता है तो उससे पानी मे रहने वाले जीव - जंतुओं पर भी नकारात्मक असर पड़ता है । कई बार तो ऐसा होता है कि समुद्र जीव जन्तु प्लास्टिक से उत्पन्न होने वाले प्रदूषकों के कारण मरने लगते है ।

प्लास्टिक का बढ़ती मात्रा मे उपयोग भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए चिंता का विषय है । प्लास्टिक के स्थान पर किसी दूसरे विकल्प को खोजने मे लोग लगे हुए है । कोई ऐसा पदार्थ जो प्लास्टिक न हो लेकिन प्लास्टिक की तरह ही हल्का, टिकाऊ एवं मजबूत हो, जो सस्ता भी हो ताकि गरीब से गरीब लोग भी इसका उपयोग कर सकें की सख्त जरूरत है । जिससे हम प्लास्टिक पर निर्भर न रह सकें । इससे पर्यावरण प्रदूषण तो कम होगा ही, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण आदि भी कम होगा ।

अब कुछ लोग प्लास्टिक का उपयोग कम करने लगे है । प्लास्टिक के स्थान पर लोग कपड़े या जूट के थेले का प्रयोग करने है । बड़े - बड़े मॅल से लेकर सब्जी दुकान तक एकल प्रयोग होने वाले प्लास्टिक को बंद किया गया है । प्लास्टिक के प्रयोग को कम करना हरेक व्यक्ति का कर्तव्य है । यह प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी होनी चाहिए। यह पर्यावरण से लेकर हरेक जगह लोगों के लिए लाभदायक है । सभी लोगो को प्लास्टिक का प्रयोग कम करने के लिए जागरूक करना चाहिए ।

भारत में प्लास्टिक प्रयोग पर प्रतिबंध

(वर्ष 2022 को हिन्दी पखवाड़ा के दौरान अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार प्राप्त निबंध ।)



श्री मिथिलेश कुमार,
लेखापरीक्षक
लेखापरीक्षा कार्यालय

भारत मे एकल प्रयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया गया है । ज़्यादातर भारतीय राज्यों इसे पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया गया है । भारत में प्लास्टिक प्रयोग पर प्रतिबंध के कई कारण है जिसमे से प्रदूषण प्रमुख कारण है । इतनी बड़ी आबादी वाले देश भारत में अगर प्लास्टिक प्रयोग पर प्रतिबंध न लगाया जाता तो प्रदूषण का स्तर बहुत ज्यादा बड़ा जाता ।

प्लास्टिक को उपयोग के बाद उसको सड़ने दृ गलने में मिट्टी के अंदर बहुत ज्यादा समय लगता है यहाँ तक कि कई वर्षों के बाद भी कई प्रकार के प्लास्टिक डिकोंपोस होने में असमर्थ है । अगर इसे जला दिया जाए तो वह मिट्टी प्रदूषण के साथ-साथ वायु को भी दूषित करना है। जिसके कारण ग्रीन हाउस गैसों का प्रभाव वायुमंडल में ज्यादा बढ़ गया है । परिणामस्वरूप इसके प्रयोग से स्थलमंडल के साथ-साथ वायुमंडल कि दशा बिगड़ रही है।

प्लास्टिक का प्रयोग ज़्यादातर हमलोग रोज मर्रा कि जिंदगी में करते है । सुबह मे उठने के बाद ब्रूस करने से लेकर शाम को सोने से पहले दवा का जो प्रयोग करते है हर चीज में प्लास्टिक शामिल है । यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है जिसे आसानी से अलग नहीं किया जा सकता है ।

सरकार को प्लास्टिक पर पूर्ण रुपेय प्रतिबंध लगाना थोड़ा मुश्किल है क्योंकि इसमे बहुत सारे नियम लागू करने पड़ेगे । बहुराष्ट्रीय कंपनी जो भी वस्तु निर्यात करती है हर चीज में प्लास्टिक का प्रयोग करती है ताकि वस्तु सस्ता हो । इस क्षेत्र में भारत सरकार को बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए कुछ अनुदान देकर यह नियम लागू करें कि प्लास्टिक के जगह विकल्प के रूप में पूर्ण रुपेय प्रतिबंध हो सकें ।



अन्तः इसमे सबसे बड़ा योगदान हम भारतवासियों को देना पड़ेगा। जहां भी एकल उपयोग प्लास्टिक का प्रयोग हो वहाँ हमे अपना झोला उपयोग करना पड़ेगा ताकि हमलोग अपना पर्यावरण को बचा सकें और एक नए भारत जो प्रदूषण मुक्त हो का निर्माण में अपना सह - भागीदारी करें ।



हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह २०२२ : एक संक्षिप्त विवरण

हिन्दी कक्ष (लेखापरीक्षा)

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग और क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से गत 29 सितम्बर, 2022 को कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया । इस अवसर पर डॅ. डी. अनीश, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), शिलांग ने अपने स्वागत भाषण में उपस्थित तीनों कार्यालयों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया । उन्होंने अपने वक्तव्य में राजभाषा से संबंधित विविध जानकारियाँ दीं तथा कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने की अपील की । उन्होंने अवगत कराया कि हिंदी पखवाड़े के आयोजन का मुख्य उद्देश्य गैर-हिंदी भाषी कार्मिकों को हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हिंदी भाषा में दक्ष बनाना है । इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के पुरस्कार एवं प्रोत्साहन राशियाँ प्रदान की जाती हैं, जिनसे उन्हें हिंदी में काम करने की प्रेरणा मिलती है । इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने से कार्मिकों का हिंदी में काम करने के प्रति आत्मविश्वास भी उत्पन्न होता है । माननीय प्रधान मंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह (12) 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसके महत्वपूर्ण स्तंभ हैं - प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास । राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह (12) 'प्र' रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी मे करने के लिए प्रेरित किया जाता है । अतः राजभाषा विभाग द्वारा बताए गए बारह (12) 'प्र' के महत्वपूर्ण स्तम्भों के आधार पर सभी कार्मिक सरकारी कार्य को सरल एवं सहज हिन्दी में करने का प्रयास करेंगे।

इस अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिकाओं क्रमशः "पूर्वाशा" का 31वें अंक और "नवीण पूर्वांचल संदेश" का 17वें अंक, का विमोचन महालेखाकार (लेखापरीक्षा) के करकमलों द्वारा किया गया । इस अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की "पूर्वाशा" पत्रिका के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कारों में क्रमशः श्री सुजीत कुमार दास, श्रीमती एल. थिएते, और सुश्री साधना कुमारी को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए । इस अवसर पर विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं जैसे, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी निबंध लेखन एवं हस्तलेखन इत्यादि प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के लिए उपहार एवं प्रमाण-पत्र समूह अधिकारियों के करकमलों द्वारा प्रदान किए गए। इसके अलावा उपरोक्त वर्णित विभिन्न प्रतियोगिताओं के शेष प्रतिभागियों को भी समूह अधिकारियों के करकमलों द्वारा सांत्वना पुरस्कार के रूप में उपहार प्रदान किए गए । इस अवसर पर प्रश्नोत्तरी और आशु भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया एवं विजेताओं को उपहार प्रदान किए गए । अन्त में इस वर्ष के हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम का समापन कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग के उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-1 और 3), श्री सागर विजय काले के धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ किया गया ।



हिन्दी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम निम्नांकित है -

क्रम सं.	प्रतियोगिताएँ	परिणाम	
1.	हिन्दी निबंध लेखन (अधिकतम 350 शब्द)	प्रथम	श्री नीरज कुमार गुप्ता
		द्वितीय	श्री भागीरथ प्रसाद
		तृतीय	श्री मिथिलेश कुमार
2.	हिन्दी हस्तलेख या लिखावट (400 शब्द)	प्रथम	श्रीमती दीपिका छेत्री
		द्वितीय	श्रीमती लालमुन हुयाल्ली थेते
		तृतीय	श्रीमती ग्रेसी हटनेऊ वाइफे
3.	अंत्याक्षरी (प्रत्येक टीम में 2 सदस्य रहेंगे)	प्रथम	कुमारी आरती शर्मा और श्री संतोष कुमार तिवारी
		द्वितीय	श्री सुरेन्द्र कुमार और और श्रवण कुमार
		तृतीय	श्री मिथिलेश कुमार और श्रीमती ल्यूसित मेगडेलिन वांसवेत
4.	अंगेजी-हिन्दी अनुवाद एवं विलोमतः	प्रथम	श्री सुरेन्द्र कुमार
		द्वितीय	श्री मिथिलेश कुमार
		तृतीय	श्री संतोष कुमार तिवारी
5.	हिंदी और हिंदीतर भाषी के लिए हिंदी कविता लेखन		हिंदी भाषी
		प्रथम	श्री मिथिलेश कुमार
		द्वितीय	श्री नीरज कुमार गुप्ता
		तृतीय	श्री सुरेन्द्र कुमार
			हिंदीतर भाषी
		प्रथम	श्री राज्यपाल देवकोटा
		द्वितीय	श्रीमती ग्रेसी हटनेऊ वाइफे
		तृतीय	श्रीमती माधवी देव
6.	प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता	प्रथम	श्री संतोष कुमार तिवारी
		द्वितीय	श्री शैलेंद्र मौर्या
		तृतीय	श्री मनीष कुमार
7.	आशु (अचिंतित) भाषण	प्रथम	श्री मनीष कुमार
		द्वितीय	श्री नीरज कुमार गुप्ता
		तृतीय	श्री प्रवीण
8.	75 वे स्वतन्त्रता दिवस पर पोस्टर ड्राइंग	प्रथम	श्री नीरज कुमार गुप्ता
		द्वितीय	श्रीमती मेरिलु ख्रीईएम
		तृतीय	श्रीमती लनाफिका लिंगदोह
9,	75 वे स्वतन्त्रता दिवस पर हिन्दी स्लोगन राइटिंग	प्रथम	श्रीमती बाइडा लांसतेह
		द्वितीय	श्रीमती लुसिल एम वांसवेत
		तृतीय	श्रीमती लनाफिका लिंगदोह



हिन्दी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान के अलावा अन्य प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया निम्नांकित है ।

1.	श्री हेमलाल परियार	13.	श्री आकाश बलिया
2.	श्रीमती दीपिका छेत्री	14.	श्री मनीष कुमार
3.	श्रीमती सुमिता उपाध्याय	15.	श्री शीन स्तीवेंसन
4.	श्रीमती नाज़िमा जिरवा	16.	श्री राजा थापा
5.	श्री राहुल ढाका	17.	श्री अशोक छेत्री
6.	श्री अमित वर्मन	18.	श्रीमती लनाफिका लिंगदोह
7.	श्री सुरजाय परियार	19.	श्रीमती आइडमान वंसवेत
8.	श्री प्रयाग सिंह	20.	श्री हलमेन ए टायफर
9.	श्री पाओखोतींथंग हाओकिप	21.	श्री सूरज कुमार
10.	श्री गौतम राय	22.	श्रीमती मौशमी बैद्य
11.	श्री अलगन जेम्स सुन	23.	श्रीमती ग्रेस यूरीका सोहतून
12.	श्रीमती देतीमोन खरबमोन	24.	श्रीमती आइबस लिंडा

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान संगीत और नृत्य के लिए निम्नलिखित कलाकारों को भी पुरस्कार प्रदान किए गए -

1. श्री संतोष कुमार 2. सुश्री आरती शर्मा 3. सुश्री प्रार्थना सुनार ।

इसके अलावा पिछले वर्ष 2022 से कार्यालय के राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष के दौरान अनुभागों द्वारा हिन्दी में टिप्पण एवं हिन्दी या द्विभाषी पत्रों का प्रेषण में सर्वश्रेठ के लिए विभागीय राजभाषा रनिंग शील्ड भी लागू की गई है ।





इस कार्यालय से सेवा निवृत्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का विवरण (सितम्बर 2022 से अगस्त 2023 तक)

	नाम एवं पदनाम	सेवा निवृत्ति तिथि
1.	श्रीमती पुष्पिता देशमुखिया, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	(30-09-2022)
2.	श्रीमती बलिदा सोकमी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	(30-09-2022)
3.	श्रीमती अर्लेसिबोन रुमनहृन्ग, सहायक पर्यवेक्षक	(31-10-2022)
4.	श्रीमती ऐताबोलिन मिर्थोंग, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	(02-01-2023)
5.	श्री कर्बोरलांग रिआहतम, एम.टी.एस.	(31-01-2023)
6.	श्री रिकी मिरटेन, पर्यवेक्षक	(28-02-2023)
7.	श्री दिसिबार सन, एम.टी.एस.	(31-03-2023)
8.	श्रीमती वर्जिनिया पिंग्रुप, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	(31-03-2023)
9.	श्री रहबिन कुमार रुचाल, सहायक पर्यवेक्षक	(30-04-2023)
10.	श्रीमती पर्सरा मैरी नोंगब्री, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	(31-07-2023)
11.	श्रीमती फाइलिन थांगख्यू, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	(31-07-2023)

"पूर्वाशा" परिवार उपरोक्त सेवानिवृत्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के स्वस्थ्य, सक्रिय एवं दीर्घायु जीवन की तहे दिल से मंगल कामना करता है ।

- सम्पादक मण्डल

श्रद्धांजलि

	नाम एवं पदनाम	जन्म तिथि	मृत्यु की तिथि
1.	स्वर्गीय एल. सिमते, हिन्दी अधिकारी	01-05-1969	15-08-2023

उपरोक्त अधिकारी के असामयिक निधन पर "पूर्वाशा" परिवार उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।

- सम्पादक मण्डल



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के सिविल ऑडिट स्पोर्टस एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 20-09-2022 को आयोजित हिंदी हस्तलेख या लिखावट प्रतियोगिता की एक झलक ।



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के सिविल एकाउंट्स स्पोर्टस एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 21-09-2022 को आयोजित अंतकक्षरी प्रतियोगिता की एक झलक ।



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 23-09-2022 को हिंदी और हिंदीतर भाषी के लिए आयोजित हिंदी कविता लेखन प्रतियोगिता की एक झलक ।



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के सिविल ऑडिट स्पोर्टस एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 19-09-2022 को आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता की एक झलक ।



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के सिविल ऑडिट स्पोर्टस एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 22-09-2022 को आयोजित अनुवाद प्रतियोगिता की एक झलक ।



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

© कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

मेघालय, शिलांग - 793 001

www.agaumeghalya@cag.gov.in